

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



महर्षि दयानन्द सरस्वती

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अक्टूबर, 2014 वर्ष 17, अंक 10

विक्रमी सम्वत् 2071

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110

दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये

ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

कुल पृष्ठ 20

आर्यावर्त के आदर्श श्रीराम

□ स्व. क्षितीश वैदालंकार

मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम से बढ़कर आर्य संस्कृति का प्रतीक दुर्लभ है। राम आर्यावर्त और भारतीय इतिहास के प्रतिनिधि के रूप में अजस्र प्रेरणा-स्रोत हैं। मानव-जीवन के विभिन्न पहलुओं के जो आदर्श हो सकते हैं, वे भी सर्वोत्तम रूप से मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम में ही घटित होते हैं। राम आदर्श राजा हैं, राम आदर्श पुत्र हैं, राम आदर्श पति हैं, राम आदर्श भाई हैं और राम आदर्श स्वामी हैं। वैदिक धर्म और ऋषियों द्वारा निर्धारित मर्यादाओं का जितने सुन्दर रूप से राम ने पालन किया, उतने सुन्दर रूप से अन्य किसी व्यक्ति ने नहीं किया। इसीलिए राम को 'रामो विग्रहवान् धर्मः' कहकर सम्बोधित किया गया है। वेद का आदेश है कि 'अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः' पुत्र पिता के व्रत का पालन करने वाला हो और माता के मन की इच्छाएं पूरी करने वाला हो। अथवा 'मा भ्राता भ्रातरं द्विक्श्न्मा स्वसारमुत स्वसा'-भाई से भाई द्वेष न करे और बहिन से बहिन द्वेष न करे। इस प्रकार परिवार में सुख और शान्ति के लिए नैतिक आदर्शों की स्थापना करने वाले जितने भी आदेश वेद में हैं, उन सबका सर्वोत्तम ढंग से पालन करने वाले महापुरुष भी कोई हैं तो श्रीराम ही हैं।

इसीलिए तो हिमालय की कन्दराओं से लेकर विन्ध्य और सह्याद्रि की अधित्यकाओं तक और जह्नुतनया भागीरथी गंगा से लेकर दक्षिण की कावेरी तक सर्वत्र राम-नाम की गूंज है। पंजाब, सिन्धु, कन्याकुमारी और रामेश्वरम् तक पूर्व-पश्चिम उत्तर-दक्षिण के किसी भी प्रदेश में चले जाओ, सर्वत्र राम की स्मृतियां बिखरी पड़ी हैं। भले ही तक्षशिला, लवपुर (लाहौर) और कुशपुर (कसूर) पाकिस्तान में चले गए हों, लेकिन वे स्मारक तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के और उनके वंशजों के ही हैं।

कवियों और सन्तों ने रामकथा को सम्प्रदायातीत बना दिया है। इसीलिए बौद्धों और जैनों के ग्रन्थों में

भी राम-कथा का समावेश है। गोंड-भील आदि शिक्षित-अशिक्षित सभी वर्गों में राम-कथा की धूम है। स्याम, अनाम, जावा, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया और मलेशिया में भी राम की कथा पहुंची हुई है। मैक्सिको में राम-सीता के नाम से उत्सव मनाया जाता है और राम के ही नाम से मिश्र के राजाओं के नाम रखे जाते हैं। बैंकाक में रामायण-सम्मेलन होता है और मौरिशस में 'गुटका तुलसी रामायण' की एक लाख प्रतियां मंगाकर घर-घर पहुंचाई जाती हैं। इस प्रकार इतिहास में अन्य शायद ही कोई ऐसा महापुरुष हो जो इतने

व्यापक रूप से चर्चित हो। राम का कुल 'रघुकुल' कहलाता है। मनु के सात पुत्र थे, जिसकी एक शाखा में भगीरथ, अंशुमान्, दिलीप, रघु आदि हुए और दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि। वैवस्वत मनु के पश्चात् इस सूर्यवंश की 39 पीढ़ियां बीत जाने पर राम अयोध्या में जन्म लेते हैं। राम के विषय में उनके गुणों का वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि ने लिखा-

रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।

वेदवेदांगतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च तिष्ठितः॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।

सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः॥

सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः।

आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः॥

स च सर्वगुणोपेतः कौशलानन्दवर्धनः।

समुद्र इव गाम्भीर्यं धैर्येण हिमवानिव॥

(वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड)

अर्थात् वे जीवलोक के रक्षक हैं, धर्म का पालन करने वाले हैं, वेद-वेदांग के तत्त्व को जानने वाले हैं, धनुर्वेद में पारंगत हैं, सब शास्त्रों के अर्थों के मर्मज्ञ हैं, स्मृतिशाली और प्रतिभाशाली हैं, सब लोगों में प्रिय हैं, साधु-स्वभाव हैं, अपनी आत्मा में कभी दीनता का समावेश नहीं है। (शेष पृष्ठ 16 पर)

दीपावली की शुभकामनाएं

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्री पूनम सूरी जी के नेतृत्व में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रथम यज्ञशाला का उद्घाटन



हवन भी किया। पिछले एक वर्ष से चल रही मासिक यज्ञ की इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अब प्रति माह के प्रथम बुधवार को इसी यज्ञशाला में हवन का आयोजन किया जायेगा। इस संस्थान की समन्वयक डॉ. रमा के अनुसार-हवन के धार्मिक महत्व के साथ साथ उसका वैज्ञानिक महत्व निर्विवाद है, अब यह केवल ऋग्वेद में उल्लिखित प्राचीन सत्य ही नहीं है बल्कि आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे 21वीं शताब्दी में परीक्षण का कसौटी पर कस कर फायदेमन्द साबित कर दिखाया है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा हंसराज की ज्ञान और संस्कार परम्परा के वाहक के रूप में हंसराज कॉलेज सतत आर्य वैदिक संस्कृति और शिक्षा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। इस दिशा में डी.ए.वी. की विचारधारा और योगदान सर्वविदित है। युवा विद्यार्थियों को इससे परिचित कराने के लिए इस अवसर

हंसराज महाविद्यालय ने मासिक हवन की परम्परा की शुरुआत की है जो युवाओं में संस्कार और मूल्यों की प्रतिष्ठा सन्देश को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करेगा। डी.ए.वी. समूह के इस प्रतिष्ठित कॉलेज में इस अनूठी पहल के तहत एक बड़ी यज्ञशाला का निर्माण भी किया गया है। हंसराज कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय का एकमात्र कॉलेज है जहाँ युवा विद्यार्थियों को वैदिक एवं भारतीय संस्कृति से जोड़ने के लिए यज्ञशाला के निर्माण की पहल की गई है। 5 सितम्बर शिक्षक दिवस के दिन महाविद्यालय में इस नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणि सूरी ने किया। उद्घाटन के उपरांत श्री पूनम सूरी ने सपत्नीक इस नई यज्ञशाला में सैकड़ों विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ पहला



पर कॉलेज सभागार में एक विशेष व्याख्यान का आयोजन भी किया गया। डी.ए.वी. के 128 वर्ष विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता श्री पूनम सूरी ने डी.ए.वी. के 128 वर्षों के विकास क्रम, उसकी संघर्ष यात्रा, उससे जुड़े महानुभावों के त्याग, समर्पण और योगदान के साथ-साथ अब तक की उपलब्धियों और आगामी योजनाओं तथा लक्ष्य से सम्बंधित पहलुओं पर प्रकाश डाला। डी. ए.वी. के 128 वर्ष के दौरान इसके विकास और विस्तार को श्री पूनम सूरी जी ने रेखांकित करते हुए इसे गर्वपूर्ण और महत्वपूर्ण बताया। साथ ही उन्होंने यह संकल्प भी व्यक्त किया की हमारा इरादा इसे अभी कई गुना और आगे बढ़ाने का है और पूरी दुनिया में आर्यों (श्रेष्ठ मनुष्य) की उपस्थिति को सुनिश्चित करना है। जाहिर है यदि हम ऐसा करने में सफल होते हैं तो कई सामयिक चुनौतियों और समस्याओं से हमें छुटकारा मिल जायेगा और सर्वत्र दया, प्रेम, करुणा, त्याग, समर्पण, सेवा आदि शाश्वत मूल्यों की स्थापना हो सकेगी।



दुःख एक वरदान है

दुःख कितना छोटा-सा शब्द है परन्तु वास्तव में जब हमें इसे सहना पड़ता है तो ही जानकारी होती है कि इसका असर कितना बड़ा और भारी है। इसकी कल्पना मात्र से ही मन-मस्तिष्क कांप जाता है। संसार में अनगिनत प्रकार के दुःख हैं परन्तु हमारे ऋषियों ने इसे तीन भागों में बांटा है जो मुख्यतया आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक हैं। रोग आदि से आने वाले शारीरिक दुःख, आध्यात्मिक दुःख में आते हैं, संसार के जीवों और प्राणियों द्वारा दिये गये दुःख आधिभौतिक वर्ग में आते हैं और प्राकृतिक बाढ़, भूकम्प आदि प्रकोपों से प्राप्त दुःख आधिदैविक दुःख कहलाते हैं। जीवनकाल में तीनों प्रकार के दुःख प्राकृतिक संरचना के नियम के अनुसार आने ही हैं। दुःख जो जड़ से नष्ट करना सम्भव नहीं है।

इसे कुछ और सरलता से समझाने का प्रयास करते हैं। दुःख जीवन की गाड़ी का एक प्रमुख पहिया है, जिसके न होने से आप कभी सुख रूपी गाड़ी को नहीं चला सकते अर्थात् दुःख नहीं है तो सुख भी नहीं है क्योंकि दुःख के होने पर ही सुख की अनुभूति होती है। कुछ और सरलता से इस बात को इस प्रकार से कहा जा सकता है कि कक्षा में ब्लैक बोर्ड (श्यामपट) पर सफेद चाक चूना से अध्यापक लिखता है और विद्यार्थी उसे पढ़ते हैं। यह एक प्राकृतिक सत्य है अगर ब्लैकबोर्ड काला होगा और चाक सफेद होगा अर्थात् दोनों के रंगों में भिन्नता होगी तभी वह अक्षर चमकते हुए नजर आयेंगे और कक्षा में बैठे विद्यार्थी उसे पढ़ सकेंगे। इस उदाहरण को अगर सुख-दुःख के दृष्टिकोण से देखा जाये तो दुःख के उपरान्त सुख तभी प्राप्त होता है जब आप दुःख में होते हैं। अत्यधिक प्यास लगने पर दुःखी मनुष्य तभी पानी पीने पर सुख का अनुभव करता है जब वह प्यासा होता है। प्यास न होने पर पिये गये पानी से सुख की वैसी अनुभूति नहीं होती जैसी प्यासा होने पर। यहां यह स्पष्ट हो गया कि दुःख होने पर ही सुख की अनुभूति है इसलिए दुःख का होना एक अनिवार्य प्रतिक्रिया है। इसे इन शब्दों में कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी “दुःख का सुख पर कितना बड़ा अहसान है।” इस छोटी-सी परिभाषा को समझते हुए दार्शनिक ने तो यहां तक लिख दिया है कि “हे परमपिता मुझे दुःख दे ताकि मैं तेरे द्वारा दिये गये सुखों को पहचान सकूँ।” दार्शनिक के शब्द हमें स्पष्ट रूप से संदेश देते हैं कि सुख भोगता हुआ व्यक्ति प्रभु द्वारा दिये गये सुखों को नहीं पहचान

आओ तुम्हें बताऊं
दुःख को दूर करना
दुःख का होना कारण
मरने से पहले मरना।

दुःख का पहला कारण
विश्वास की कमी है
मन पर है मैल तेरे
अभिमान की जमी है।
अरे कुछ भी न हाथ तेरे
मरना है न है जीना

दुःख का दूसरा कारण
मन की यह दास्ता है
कर्तव्य से आंख मूंदे
इच्छाओं को मांगता है
अरे कर्मों के वृक्ष पर ही
फल का है होता आना॥

दुःख का तीसरा कारण
मोह का कड़ा यह बन्धन
रिश्तों की खोल लकड़ी
जिसको तू समझे चन्दन
समय तो पोल खोले
पर सयाना जो पहले जाना

दुःख का चौथा कारण
यह अग्नि द्वेष की है।
सुख चैन को जलाती है
जड़ यह क्लेश की है।
जिस दिल में है यह अग्नि
उस ने ही पहले जलना

दुःख का पांचवां कारण
दोरंगी है चाल चलनी
होना न जो दिखाना
कथनी से उल्टी करनी
अपमान की रहे चिन्ता
पोल जब हो खुलना

दुःख का छठा कारण
समय समान ना बनना
जीवन में बचपना है
बुढ़ापे का तन पर बाना
अरे सूरज भी जानता है
सन्ध्या को आके जाना

चिन्ता चिता है दूजी
जिन्दा है इसमें जलना
बस इतना भरोसा रख तू
भरना है जो तू करना
कर्मों की ‘चमन’ तराजू
दुःख सुख है उस पर तुलना
आओ तुम्हें बताऊं
दुःख को दूर करना

‘चमन’ गुरदासपुरी, देहरादून

पाता, केवल दुःखी मनुष्य ही छोटे-से-छोटे सुख की अनुभूति शीघ्रता से कर लेता है।

किसी व्यक्ति के पास केवल बिजली का एक पंखा है वह उसी में सुख का अनुभूति कर रहा है परन्तु वातानुकूलित भवन में बैठा व्यक्ति वातानुकूलित मशीन खराब हो जाने पर जब पंखे का प्रयोग करता है तो वह दुःख का अनुभव महसूस करता है। कारण है कि प्रभु द्वारा वातानुकूलित भवन दिये जाने पर वह पंखे के सुख की अनुभूति में सुख की परिकल्पना नहीं करता जबकि दूसरा व्यक्ति उसी पंखे में सुख का अनुभव कर रहा है और कह रहा है कि परमपिता परमात्मा तेरा कितना धन्यवाद है कि कल तक मैं हाथ के पंखे से अपनी जीवन व्यतीत कर रहा था और अब बिजली के पंखे का सुख दिया है। वातानुकूलित भवन में बैठा व्यक्ति इस अनुभूति को कभी भी समझ नहीं पायेगा क्योंकि वह प्रभु द्वारा दिये गये सुखों को दुःख ही मानने लगता है।

इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि सुख-दुःख में समान रहो अर्थात् सुख में अधिक प्रसन्न न हो और न दुःख में घबरा कर विलाप करो। दुःख इस जगत अभिशाप नहीं है अपितु ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। परमपिता परमात्मा जिस पर अधिक कृपा करता है, उसका समय आने पर धन भी छीन लेता है क्योंकि मनुष्य प्रभु द्वारा दिये गये धन और सुख के मद में मतवाला हो जाता है और यहां तक धृष्टता कर बैठता है कि वह परमपिता परमात्मा तक को अपनाना भूल जाता है। सुखी अभिमानी व्यक्ति कल्याण के साधनों से वंचित हो जाता है।

वास्तविकता यह है कि दुःख मानव जीवन की कसौटी है और कल्याण का मार्ग भी इसी से गुजरता है। जैसे रात्रि के सघन अंधकार के बाद प्रभात का उदय होता है, वैसे ही दुःख के बीच में सुख का उदय होता है। दुःख सहने से मन निर्मल हो जाता है और निर्मल मन से ही ईश्वर भक्ति, ईश्वर प्राप्ति की राह होती है। जिस व्यक्ति ने भी ईश्वर की अनुभूति की है दुःख सह कर ही की है। अर्थात् यूं कहें कि ईश्वर द्वारा दिए गए दुःख में ईश्वर कृपा ही छुपी हुई है तो गलत नहीं होगा। तभी तो कबीर जी ने कहा है कि-

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जय शंकर प्रसाद जी ने भी लिखा है कि
“दुःख संसार का अभिशाप नहीं अपितु ईश्वर का गूढ़ वरदान है।”

अजय टंकारावाला

ऋग्वेद में दान

□ शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक धर्म में दान की बड़ी महत्ता है। किसी भी निर्धन अशक्त, विकलांग, विपदाग्रस्त व्यक्ति को उसकी आवश्यकतानुसार कुछ पदार्थ सहयोग के रूप में दे देना तथा उसकी पुनः प्राप्ति की इच्छा भी न करना ही दान है। इसी प्रकार किन्हीं संस्थाओं को जो समाज सेवा में निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रही हो, सहायतार्थ कुछ आर्थिक सहायता अथवा सामग्री दे देना भी दान ही कहलाता है। राष्ट्रीय आपदा जैसे भूकम्प, ज्वालामुखी, बाढ़ अथवा अकाल से पीड़ित जनता की सब तरह से की जाने वाली सहायता दान ही कहलाती है। ऋग्वेद में भी यह दान की महिमा पर बहुत कुछ कहा गया है, यहां पर हम वहीं से कुछ ऋचाओं को लेकर दान पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

स इद्भोजो गृहवे ददात्यनकामाय चरते कृशाय। अरमस्मै भवति यामहुता उतापरीषु कृणुते सखायम्। ऋ. 10.117.3

पदार्थ- (सः) वह (इत्) ही (भोजः) दाता है (यः) जो (गृहवे) प्रतिगृहिता (अन्नकामाय) अन्न चाहने वाले (चरते) पर पर जाकर याचना करने वाले (कृशाय) अभाव से पीड़ित के लिए (ददाति) देता है! (अस्मै) उसके लिए (यामहुतौ) इन दान कर्म रूपी यज्ञ में (अरम्) पर्याप्त फल (भवति) होता है। उसे समाज में बड़ा सम्मान प्राप्त होता है। (उत) और (अपरीषु) अन्य विरोधी वर्गों में भी (सखायम्) मित्र (कृणुते) बना लेता है। जिसके पास पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति है उसे दान देने में कृपणता के वश में नहीं होना चाहिए।

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्धाधीयासमनु पश्येत पन्थाम्। ओहि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यनुपतिष्ठन्तः रायः। ऋ. 10.117.5

पदार्थ- (तव्यान्) धन आदि से प्रबुद्ध मनुष्य को (इत्) भी चाहिए कि (नाधमानाय) याचना करने वाले को (पृणीयाद) धन देवे (द्राध) धीयासम् दीर्घतम (पन्थाम्) व्यवहार और सुकृत के मार्ग को (अनुपश्येत) देखे, (ओहि) अरे (रायः) ये धन तो (रथ्या चक्रा) रथ के पहिये के (इव) समान (वर्तन्ते) होते हैं और (अन्यम् अन्यम्) दूसरे के दूसरे के पास (उपतिष्ठन्ते) ठहरते हैं।

भावार्थ- धन सम्पदा से बढ़े हुए व्यक्ति को भी चाहिए कि वह याचना करने वाले को धन देवे और व्यवहार तथा परमार्थ के दीर्घतम मार्ग को देखे। अरे ये धन तो रथ के पहिये के समान फिरते हैं और एक से दूसरे से पास जाते रहते हैं।

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्या।

न्यार्यमणं पुष्यति नो सखाय केवलाद्यो भवति केवलादी।

ऋ. 10.117.6

(अप्रचेतः) अप्रकृष्ट ज्ञान (स) वह अदाता धन का स्वामी (अन्नम्) अनादि पदार्थों को (मोघम्) व्यर्थ (विन्दते) प्राप्त करता है। मैं परमेश्वर (ब्रवीमि) कहता हूँ कि (सत्यम्) वास्तव में (तस्य) उसकी यह (वधः इत्) मौत ही है (न) न तो वह (अर्यमणम्) सत्यवादी विद्वान का (पुष्यति) पोषण करता है। (न) और न (सखायाम्) आपत्ति ग्रस्त मित्र का पोषण करता है। (केवलादी) अकेला खाने वाला वह (केवलाद्यः) केवल पाप खाने वाला (भवति) होता है।

भावार्थ- आगे पीछे न देखने वाला वह धन का स्वामी अन्न आदि पदार्थों को व्यर्थ ही प्राप्त करता है। मैं ईश्वर यह उपदेश करता हूँ कि वास्तव में उसका यह धन उसकी मौत है। न तो वह विद्वान का पोषण करता है और न आपत्ति में पड़े साथी जन का ही वह पोषण करता है। वह अकेला भोग करने वाला, अकेला खाने वाला केवल पाप का खाने वाला होता है।

धन की सबसे अच्छी गति केवल दान ही है।

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय।

वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं चवाजिनम्। ऋ. 10.141.5

दान तो वास्तव में जड़ पदार्थ भी देते रहते हैं ऐसा इस ऋचा में वर्णन है। अगली ऋचा भी इसी प्रकार की है। पदार्थ-हे परमेश्वर। आप (अर्यमणम्) अग्नि (बृहस्पतिम्) पर्जन्य (इन्द्रम्) विद्युत (वातम्) वायु (विष्णुम्) यज्ञ (सरस्वतीम्) माध्यमिका वाक् (च) और (वाजिनम्) अन्नों वाले (सवितारम्) सूर्य को हमारे लिए (दानाय) दानार्थ (चोदय) प्रेरित कीजिए।

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय।

त्व नो देवतातवये रायो दानाय चोदये। ऋ. 10.141.6

पदार्थ-हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप परमेश्वर। (त्वम्) तू (अग्निभिः) गतिशील शक्तियों और अग्नि आदि पदार्थों से (नः) हमारे (ब्रह्म) ज्ञान (च) और यज्ञ को (वर्धय) बढ़ाओ (त्वम्) तू (नः) हमें (देवतातये) यज्ञ भावना की पूर्ति के लिए (रायः) धन के (दानाय) प्रदान करने के लिए (चोदय) प्रेरित कर।

भूरिदा भूरि देहि नोमा दध्नं भूर्या भर।

भूरि धेरिन्द्र दित्ससि। ऋ. 4.32.20

पदार्थ-हे (इन्द्र) देने वाले। जो आप (नः) हम लोगों के लिए (भूरि) बहुत (दित्ससि) देने की इच्छा करते हो। वह (भूरिदाः) बहुत देने वाले आप हम लोगों के लिए (भूरि) बहुत (देहि) दीजिए और (भूरि) बहुत को (आ भर) सब प्रकार धारण कीजिए (दध्नम्) थोड़े को (ध) ही (मा) मत दीजिए और थोड़े को (इत) ही न धारणा कीजिए। भावार्थ- जो बहुत देने वाला है वही प्रशंसा को प्राप्त होता है और जो थोड़ा देने वाला वह इस प्रकार प्रशंसित नहीं होता है।

भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन्।

आ नो भजस्व राधसि। ऋ. 4.32.21

पदार्थ- हे (शूर) शत्रुओं का नाश करने वाले (वृत्रहन्) धन को प्राप्त राजन्। आप (हि) जिससे (भूरिदाः) बहुत देने वाले (असि) हो। इससे (पुरुत्रा) बहुतों में प्रतिष्ठित और (श्रुतः) सब जगह प्रसिद्ध यज्ञ वाले हो जिससे आप (नः) हम लोगों को (राधसि) अच्छे प्रकार साधते हो इससे हम लोगों को (आ भजस्व) अच्छे प्रकार सेवो।

भावार्थ- जो इस संसार में बहुत देने वाला होता है वही सम्पूर्ण दिशाओं में कीर्तिवाला होता है। जो हमसे दान की याचना करे उसे हमें दान अवश्य देना चाहिए।

यो नः सनुत्यो अभिदासदग्नेयो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात्।

तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैस्तथा तपिष्ठ तपसा तपस्वान। ऋ. 6.5.4.

पदार्थ-हे (तपिष्ठ) अत्यन्त तप करने वाले और (मित्रमहः) बड़े मित्रों से युक्त (अग्ने) विद्वन् (यः) जो (सनुत्यः) निश्चित अन्तर्हित अर्थात् मध्य के सिद्धान्तों से प्रकट हुआ अथवा श्रेष्ठ (नः) हम लोगों का (अभि दासत्) चारों ओर से नाश करता है और (यः) जो अन्तरः हम लोगों से भिन्न (वनुष्यात्) याचना करे (तम्) उसकी (अजरेभिः) वृद्धावस्था से रहित (वृषभिः) बलिष्ठ युवा (तव) आपके (स्वैः) अपने जनों के साथ (तपः) तप युक्त करो वा तपस्वी हो ओ और (तपसा) ब्रह्मचर्य और प्राणायाम आदि कर्म से (तपस्वान) बहुत तपवान हूँजिये।

भावार्थ- हे मनुष्यो! जो आप लोगों से याचना करे उसे सुपात्र के लिए यथा शक्ति दान करिये और जो पीड़ा देवे उसको पीड़ित करो और तपस्वी होकर धर्म का आचरण करो।

- 73, शास्त्री नगर, कोटा (राज.)

दीपावली पर्व का वैज्ञानिक स्वरूप

□ अर्जुनदेव चड्ढा

दीपावली प्राचीन वैदिक पर्व है। इसका वैदिक नाम शारदीय नवसस्येष्टि है। शारदीय, शरदकाल की, नवसस्येष्टि-नव-नयी, सस्य-फसल, इष्टि-यज्ञ अर्थात् नई फसल का यज्ञ। इस प्रकार शारदीय नवसस्येष्टि का शाब्दिक अर्थ हुआ-शरदकाल की नई फसल का यज्ञ।

भारतवर्ष में दो फसलों का विशेष महत्व है-पहला वासंती फसल का और दूसरा शारदीय फसल का। वासंती फसल चैत्रमास में काटी जाती है और शारदीय फसल आश्विन में। चैत्र मास की मुख्य फसलें गेहूं, जौ चना, मटर, सरसों, अलसी आदि हैं। आश्विन मास की मुख्य फसलें धान, उड़द, मूंग, सावां, मक्का आदि हैं। गेहूं और धान की फसल शीर्षस्थ है। इसी कारण इनकी कटाई के समय किसान आनन्दोत्सव मनाते थे। इस उत्सव में वे इन फसलों के नए अन्न की आहुति प्रदान करते थे। घर में नया अन्न आने पर प्रसन्नता का होना स्वाभाविक है।

जब शारदीय फसल घर में आती थी, उस समय वर्षा की अवधि समाप्त हो जाती थी। वर्षा के चार महीनों में धरती आर्द्र रहती थी जिससे घरों में नमी के कारण सीलन भी आ जाता था। कूड़े कचरे भी सड़कर दुर्गन्ध उत्पन्न करते थे। इन सबका परिणाम होता था तमाम प्रकार के रोगाणुओं का जन्म। वर्षा-समाप्ति के पश्चात् पड़ने वाली धूप से लोग बीमार भी हो जाते थे, कारण स्पष्ट है रोगों के कीटाणुओं का उत्पन्न होना। पूरा वातावरण संशोधन के योग्य हो जाता था। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि वातावरण के संशोधन के लिए यज्ञ करते थे। उसमें कीटाणुनाशक अनेक प्रकार की औषधियों का प्रयोग कर आहुति देते थे। उस आहुति से रोगों के कीटाणुओं का विनाश हो जाता था और वातावरण एकदम शुद्ध। परिमार्जित। पवित्र।

गांवों में अभी भी लोग नवान्नेष्टि करते हैं। नए अन्न को लाकर उसे चूल्हे में डालते हैं। जैसे वसंत ऋतु की महिमा गाई गई है उसी प्रकार शरद ऋतु की भी महिमा मंडित की है। यथा-जीवेम शरदः शतम् पश्येम शरदः शतम् श्रणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात्। न अधिक सर्दी न अधिक गर्मी-इसी कारण यह सुहावनी ऋतु है। शरद पूर्णिमा के चांद को देखकर कौन मुग्ध नहीं होता। प्रकृति का दृश्य अवलोकनीय हो जाता है। रमणीय हो जाता है।

इस मनभावनी ऋतु के उपलक्ष्य में वातावरण के संशोधनार्थ दीपावली का वैज्ञानिक पर्व प्राचीनकाल से प्रचलित है। दीपावली नाम बाद का है। बहुत कुछ संभव है शारदीय नवसस्येष्टि के अवसर पर कृषक वर्ग, व्यापारी वर्ग, शहर-गांव के लोग अपने घरों की सफाई करते थे। कार्तिक मास की सर्वाधिक अंधकार वाली रात्रि अमावस्या को अपने घरों को, राहों को, गली-कूचों को, खेतों को, दुकानों को सर्वत्र दीपों की अवलियों से सजाया करते थे जिसमें सरसों के तेल का, घी का प्रयोग किया जाता था। दिन में घर-घर नए अन्न का यज्ञ और रात में दीपों की अवलियों की जगमगाहट से पूरा का पूरा वातावरण संशोधित हो जाने से रोगों के कीटाणुओं का शमन हो जाता था। मन आह्लाद और प्रसन्नता से भर जाता था। इसी प्रसन्नता में लोग अपने सगे-संबंधियों, इष्ट-मित्रों, पड़ोसियों को मिष्टान्न वितरित करते थे।

कितना वैज्ञानिक पर्व था यह वातावरण से जुड़ा हुआ, लोगों को स्वास्थ्य-रक्षा के प्रति सजग करता था। पर्यावरण की रक्षा का सामूहिक उत्तरदायित्व निभाता हुआ।

इस प्रकार पर्यावरण-रक्षा का महान पर्व है दीपावली, किन्तु पता नहीं कब से और कहां से इस पर्व के साथ पटाखों और आतिशबाजियों का संबंध जुड़ गया, जबकि इस पर्व का पटाखों से दूर का भी संबंध नहीं है। उल्टे हम इस महान पर्यावरणीय पर्व को पटाखों और आतिशबाजियों से प्रदूषित करते हैं। यह कहां की बुद्धिमत्ता है। हमें इस बात को गहराई से समझना होगा और पर्यावरण रक्षा से जुड़ना होगा। संकल्प करना होगा कि इस महान वैज्ञानिक पर्व के दिन पटाखों से पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करेंगे। हम पढ़े-लिखे लोग शहरवासी इसके लिए अधिक जिम्मेदार हैं। दीपावली को दीपावली के रूप में रहने दें, अन्यथा विकृत पर्यावरण में रहना मुश्किल हो जाएगा।

हम स्वाध्याय से दूर होते जा रहे हैं। इसी कारण दीपावली पर्व को राम के अयोध्या आगमन से जोड़कर अपने चिन्तन को इतिश्री कर देते हैं। राम ने रावण का वध चैत्र मास की चतुर्दशी तिथि को किया था। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में, चैत्रमास चौदस तिथि आयी। मर्यादित जग दुःखदायी। वाल्मीकी रामायण में स्पष्ट लिखा है-**अभ्युत्थानं त्वमद्यैव कृष्णपक्षचतुर्दशीम्। कृत्वा निर्याह्यमावास्यां विजयाय बलैर्वतः॥**

अर्थात् आज कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी है। आज आप युद्ध की पूर्ण तैयारी कीजिए। कल अमावस्या को सेना को साथ ले। विजय के लिए दुर्ग से बाहर निकालिए। यह बात उस समय की है जब रावण अपने पुत्र इन्द्रजीत के वध से दुःखी होकर सीता को मारने के लिए उद्यत हुआ। तब उसे रोकते हुए सुपाशर्व ने कहा था। श्रीराम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना था- **चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः। यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकलपघताम्॥ अयो.**

जब राम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना था तो स्पष्ट है कि उनका चौदह वर्ष का वनवास उसी मास में पूर्ण हुआ। उसी मास में वे अयोध्या लौटे होंगे। अतएव विजयादशमी पर्व और दीपावली पर्व के साथ राम-रावण का संबंध जोड़ना न्यायसंगत नहीं है। ये दोनों महापर्व अति प्राचीनकाल वैदिक युग से चले आ रहे हैं। राम के काल से भी पूर्व ये पर्व मनाए जाते थे। शारदीय नवसस्येष्टि शब्द तो विलुप्त हो गया। उसका उद्देश्य समाप्त। दीपावली का शुभ आगमन। रातभर जागकर पटाखों से ध्वनि प्रदूषण करना। रोगियों, वृद्धों, बच्चों की नींद कराम कर देना। स्वास्थ्य को दरकिनार करना। मिट्टी और तेल-घी के दीप गायब। विद्युत बल्बों का प्रचलन, कैंडल का जलाया जाना। वास्तव में विचार करें तो देखेंगे कि हमने इस पर्व की वैज्ञानिकता, महत्ता और वास्तविकता को खो दिया है। यदि नहीं कुछ कर सकते तो इतना तो हम संकल्प ले ही सकते हैं कि पर्यावरण की रक्षा के नाम पर पटाखे न छोड़ें। ऐसा न करके हम प्रकृति के साथ बहुत बड़ा मैत्री भाव जोड़ सकते हैं जो आज आवश्यकीय हो गया है।

घर-घर यज्ञ हो। घी-सरसों के तेल वाले दीपों से घर, गली, मुहल्ले सजाए तो सारा वातावरण सुगन्धित और रोगों के कीटाणुओं से रहित हो जाएगा। घी-सरसों के दीपों की लौ से लाखों दीपों की रोशनी से अवश्य पर्यावरण पर

अच्छा प्रभाव पड़ेगा। कार्तिक मास की अमावस्या तिथि का यह वैज्ञानिक महत्व है जो सीधे पर्यावरण की रक्षा का पर्व है।

आधुनिक युग के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण भी इसी दिन हुआ था। 30 अक्टूबर 1883 के दिन। आर्य समाज इस पर्व को महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के रूप में भी मनाता है। इस युग पुरुष ने हमें वेदों की ओर लौटने का महान संदेश दिया। अपने भारतीय पर्वों को जानने का उपक्रम किया। हम वापस लौटें अपने पर्वों की वास्तविकता को जानने के लिए। हर पर्व के पीछे कोई-न-कोई वैज्ञानिक कारण अवश्य है। उस पर हमें बल देना होगा। उसी तरीके से मनाना होगा। आज सारा विश्व पर्यावरण-समस्या से जूझ रहा है और हम अपनी खुशियां इजहार करने के लिए पावनतम पर्यावरणीय रक्षा के पर्व को पटाखों से पाट रहे हैं। वातावरण में विष घोल रहे हैं। अतः यज्ञ करें। इस पर्व की वैज्ञानिकता को समझें।

आर्थिक दृष्टि से यदि हम विचार करें तो देखेंगे कि हम प्रति वर्ष लाखों रुपये के पटाखे फोड़ते हैं। उससे हमें कौन-सी उपलब्धि हासिल होती है। एकदम शून्य। पर्यावरण का हनन। यदि उस धन को सृजन के कार्य में लोक कल्याण में लगा दिया जाता तो धरती और समाज का नवनिर्माण हो जाता। गौशाला, वृक्षारोपण, चिकित्सालय, धर्मशाला, सड़क निर्माण, शिक्षा जैसे तमाम लोककार्य है जहां उस धन का सदुपयोग किया जा सकता है। इसके लिए हमारी सोच सृजनात्मक होनी चाहिए। आतिशबाजियों और पटाखों से तमाम दुर्घटनाएं भी हो जाती हैं। आग लग जाती है, आंखें फूट जाती हैं, हाथ जल जाते हैं, और स्वास्थ्य को धक्का लगता है उपर से। ऐसे खतरनाक मनोरंजन से क्या मिला। ध्वनि प्रदूषण से ओजोन परत भी बहुत प्रभावित होती है। वायु प्रदूषण का तो कहना ही क्या। वायु जीवन है। उसके बिना हम एक पल भी जीवित नहीं रह सकते। ऐसे जीवरक्षक की रक्षा करें।

आइए हम सब मिलकर चिन्तन करें। सबकुछ अपने हाथों में है। इस महापर्व को पुनः विज्ञान से जोड़कर देखें। इसके उद्देश्य को समझें और पर्यावरण की रक्षा करें। यदि ऐसा करेंगे तो अवश्य लाभ मिलेगा।

चिन्तन-मनन नहीं करेंगे तो निश्चित रूप से हम अमावस्या के गहन अंधकार में डूबते ही जाएंगे। पर्व हमें कुछ करने के लिए बाध्य करते हैं पर हम उनकी वास्तविकता पर ध्यान नहीं देते। धन का नाम लक्ष्मी है। लक्ष्मी-पूजन का अर्थ है धन का सत्कार करना, उसका सदुपयोग करना, उसे निर्माण कार्य में लगाना, जहां अभाव है वहां उसकी पूर्ति करना। कहते हैं लक्ष्मी का वाहन उल्लू है। यह एक प्रतीकार्थ है। उल्लू को रात में दिखाई देता है दिन में नहीं। यह प्रतीक संदेश देता है कि मनुष्य को धनाधिक्य में मदान्त नहीं होना चाहिए। ऐसा न हो कि दिन के स्थान पर वह रात्रि का अनुगमन करने लगे।

-4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा (राज.), मो. 09414187428

सहयोगार्थ अपील

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पं. सत्यपाल पथिक जी अपनी आयु के 80 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं और अपना पूरा जीवन आर्य समाज की सेवा में प्रचारार्थ दिया है। वे पुरानी पीढ़ी के आर्य प्रचारक हैं। आज तो सभी सुख सुविधायें उपलब्ध हैं, परन्तु उस समय जब कोई सुख सुविधा नहीं थी, तब उन्होंने अपने सामान की गठरी सिर पर रखकर गांव गांव पैदल जाकर आर्य समाज का प्रचार प्रसार भजनों के माध्यम से किया है। श्री पं. सत्यपाल पथिक जी की हृदय शल्य चिकित्सा (हार्ट का ऑपरेशन) हो रही है। ऐसी आपातकालीन स्थिति में हम सभी आर्यों का कर्तव्य बनता है कि उनकी सहायतार्थ अपनी ओर से एवं अपनी संस्था की ओर से अधिक से अधिक सहायता राशि **“श्री सत्यपाल पथिक” जी के नाम केवल खाते में चैक/ड्राफ्ट द्वारा उनके पते 70-ए, गोकुल नगर, मजीठा रोड, अमृतसर, पंजाब-143001** पर सहायतार्थ भिजवाकर पुण्य के भागी बनें।



- रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मंत्री

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उच्छ्रण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **‘श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा’** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मंत्री)

हनुमान का पहाड़ उठा लाना

□ स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

रणभूमि में रावण द्वारा फेंकी गई शक्ति से आहत होकर लक्ष्मण का मरणासन्न हो जाना और हनुमान द्वारा लाई गई संजीवनी नामक औषधि से स्वस्थ हो जाना सर्वविदित है। परन्तु इससे पूर्व हुई इसी प्रकार की दुर्घटना का ज्ञान प्रायः लोगों को नहीं है। एक दिन इन्द्रजित् (मेघनाद) ने ब्रह्मास्त्र का आश्रय लेकर समूची वानर सेना को अचेत कर दिया। अचेत होने वालों में राम और लक्ष्मण भी थे। जाम्बवन्त कुछ होश में थे। विभीषण और हनुमान उनके पास पहुंचे और उन्हें इस स्थिति से अवगत कराया। तब जाम्बवन्त ने हनुमान से कहा कि तुम वानर सेना को बचा सकते हो, क्योंकि तुम सागर के ऊपर सुदीर्घ मार्ग से जाकर हिमालय तक पहुंच सकते हो। वहां तुम ऋषभ नामक उत्तम पर्वत और कैलाश शिखर को देखोगे—

तयोः शिखरयोर्मध्ये प्रदीप्तमतुलप्रभम्।
सर्वौषधियुतं वीर द्रक्ष्यस्योषधिपर्वतम्॥३१॥
तस्य वानरशार्दूल चतस्रो मूर्ध्नि संभवाः।
द्रक्ष्यस्योषधयो दीप्ता दीपयन्त्यो दिशो दिशः॥३२॥
मृतसंजीवनीं चैव विशल्यकरणीमपि।
सावर्ण्यकरणीं चैव सन्धानकरणीं तथा॥३३॥
ताः सर्वा हनुमन् गृह्य क्षिपमागन्तुमर्हसि।
आश्वासय हरीन् प्राणयौज्य गन्धवहात्मज॥३४॥

हे वीर! उन दोनों शिखरों के मध्य देदीप्यमान, अनुपम, सर्वौषधियों से युक्त औषधिशिलाखण्ड को देखोगे। उस औषधिशिलाखण्ड की चोटी पर उत्पन्न होने वाली चार जाज्वल्यमान औषधियों को देखोगे। मृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सावर्ण्यकरणी और सन्धानकरणी—इन चार औषधियों को तुम देखोगे। हे हनुमान, इन औषधियों को शीघ्र लाने में तुम समर्थ हो। उन औषधियों को देकर तुम सबको प्राणों से युक्त कर दो। जाम्बवन्त के वचनों से प्रोत्साहित होकर हनुमान हिमालय पर जा पहुंचा—

स तं समीक्ष्यानलरश्मिदीप्तं विसिष्मिये वासवदूतसूनुः।
आवृत्य तं चौषधिपर्वतेन्द्रं तत्रौषधीनां विचयं चकार॥६२॥
ततो महात्मा निपपात तस्मिञ्शैलोत्तमे वानरसैन्यमध्ये।
हर्युत्तमेभ्यः शिरसाभिवाद्य विभीषणं तत्र च सस्वजे च॥७२॥
तावप्युभौ मानुषराजपुत्रौ तं गन्धमाघाय महौषधीनाम्।
बभूवतुस्तत्र तदा विशल्यावुत्तस्थुरन्ये च हरिप्रवीराः॥७३॥

वह हनुमान उस पर्वत को देखकर चकित हो गया और जल्दी-जल्दी औषधियों का चयन करने लगा। इसके पश्चात् वह उस उत्तम पर्वत पर वानरों के बीच उतरा और वरिष्ठ वानरों का अभिवादन करके विभीषण से गले मिला। महौषधियों की गन्ध को सूंघ कर राम-लक्ष्मण और अन्य सभी पीड़ामुक्त हो गये। कुछ समय बाद एक बार फिर वैसी ही घटना घटी। इस बार रावण ने लक्ष्मण को लक्ष्य करके शक्ति का प्रयोग किया। यह शक्ति इतनी भयानक थी कि लक्ष्मण के शरीर को भेदकर भूतल में घुस गई थी। लक्ष्मण को सर्प के समान छटपटाता देखकर राम धैर्य खो बैठे और कह दिया—‘जबकि मैं भाई लक्ष्मण को मरा हुआ देख रहा हूं तो अब न मेरा युद्ध से प्रयोजन है, न राज्य से, न सीता से और न

अपने प्राणों से। तब राम को धैर्य देते हुए सुषेण बोले—

च मृतोऽयं महाबाहो लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः।
च चास्य विकृतं वक्त्रं नापि श्यामं न निष्प्रभम्॥ सर्ग 102,151
एवं न विद्यते रूपं गतासूनां विशां पते।

दीर्घायुषस्तु ये मर्त्यास्तेषां तु मुखमीदृशम्॥७॥

हे महाबाहो! यह लक्ष्मण मरा नहीं है। इसका मुख न विकृत हुआ है, न काला पड़ा है और न प्रभाहीन हुआ है। प्राणरहित मनुष्य का रूप ऐसा नहीं होता। जो मनुष्य दीर्घजीवी होते हैं उनका रूप ऐसा होता है।

तब सुषेण पास खड़े हुए हनुमान से बोले—

सौम्य शीघ्रमितो गत्वा शैलमौषधिपर्वतम्।
पूर्व ते कथितो योऽसौ वीर जाम्बवता शुभः॥२१॥

दक्षिणे शिखरे तस्य जातमौषधिमानय।
विशल्यकरणीं नाम्ना सावर्ण्यकरणीं तथा॥२२॥

संजीवनीमपि वीर सन्धानीं च महौषधम्।
संजीवनार्थं वीरस्य लक्ष्मणस्य त्वमानय॥२३॥

इत्येवमुक्तो हनुमान् गत्वा चौषधिपर्वतम्।
चिन्तामभ्यगमच्छ्रीमानजानंस्तं महौषधीम्॥२४॥

तस्य बुद्धिःसमुत्पन्ना मारुतेरमितौजसः।

इदमेव गमिष्यामि गृहीत्वा शिखरं गिरेः॥२५॥

हे सौम्य वीर! यहां से शीघ्र औषधिपर्वत पर जाओ जिसके विषय में तुम्हें पहले जाम्बवन्त ने बताया था। उसके दक्षिण शिखर पर उत्पन्न औषधि ले आओ। वहां पर उगी विशल्यकरणी, सावर्ण्यकरणी, संजीवनी तथा सन्धानी नाम से प्रसिद्ध महौषधियों को यहां ले जाओ। उन्हीं से लक्ष्मण के जीवन की रक्षा होगी। (विशल्यकरणी=शरीर में धंसे हुए बाण आदि को निकालकर घाव को भरने और पीड़ा दूर करने वाली; सावर्ण्यकरणी=शरीर की त्वचा की पहले जैसी रंगत लाने वाली; संजीवनी=मूर्च्छा दूर कर चेतना प्रदान करने वाली और सन्धानी=टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने वाली) उनके ऐसा कहने पर हनुमान औषधि पर्वत पर जा पहुंचे। पर उन औषधियों को न पहचानने के कारण चिन्ता में पड़ गये। तब उन्होंने सोचा कि क्यों न इस पर्वत शिखर को ही ले चलूं और तब वे उस पर्वत शिखर को उखाड़ कर ले आये।

पर्वत को उठाकर लाना सम्भव नहीं। काव्यशास्त्र का सिद्धान्त है—‘मुख्यार्थबाधेलक्षणा’—जहां मुख्य अर्थात् प्रसिद्ध अर्थ सम्भव नहीं होता वहां लक्षणा से काम लिया जाता है। पति के एक साथ ढेर सारी सब्जियां ले आने पर पत्नी के इस कथन को कि आज तो आप सारी सब्जी मण्डी ही उठा लाये अक्षरशः कौन मान सकता है? जब पहली बार हनुमान औषधिपर्वत पर इन्हीं औषधियों को लेने गये तो वहां लिखा है—‘तत्रौषधीनां निचयं चकार’ वहां हनुमान ने औषधियों का चयन किया। ऐसा प्रतीत होता है कि हनुमान को जब सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने आस-पास की मिलती-जुलती औषधियों का संग्रह करके बड़ी-बड़ी गठरियां बांध ली होंगी। वहां यह भी लिखा है कि लंका से हिमालय की दूरी एक हजार योजन अर्थात् लगभग पांच हजार मील थी। आपातकाल (Emergency) में यह दस हजार मील की दूरी और फिर तीस हजार फीट

की चढ़ाई विमान द्वारा ही संभव थी और जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं कि जैसे आज सैकड़ों यात्रियों को ले जाने वाले बड़े-बड़े विमानों के अतिरिक्त हेलीकाप्टर जैसे छोटे-छोटे विमान हैं, वैसे ही उस समय भी पुष्पक विमान जैसे विमानों के अतिरिक्त बड़े-बड़े लोगों के पास छोटे-छोटे विमान थे। ऐसे ही छोटे विमान से हनुमान ने यह यात्रा की होगी और उसी पर बड़े परिणाम

में जड़ी-बूटियां लाद कर लाये होंगे। इसी को प्रौढ़ोक्ति अथवा अर्थवाद के रूप में पर्वत उठाकर लाना कह दिया होगा। एक बात और-जब एक बार हिमालय से ओषधि पर्वत ले आया था तो युद्ध के चलते हनुमान उसे हिमालय पर वापस क्यों रख आया?

— रामायण भ्रान्तियां और समाधान से साभार

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1 वेद प्रचार सप्ताह आयोजित



वीरेन्द्र विक्रम जी ने ब्रह्मा जी को सहयोग प्रदान कर अपने पद को गौरवान्वित बनाये रखा। इस अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति श्री योगराज अरोड़ा ने मुख्य अतिथि की भूमिका निभाई। अन्य गणमान्य अतिथियों में एमिटी के डायरेक्टर श्री आनन्द चौहान व गंगा राम हॉस्पिटल के सीनियर सर्जन डॉ. विनोद मलिक उपस्थित थे। स्थानीय आर्य समाज के गणमान्य सदस्यों के अतिरिक्त आस-पास के आर्य समाजों से भी आकर श्रोताओं ने उत्सव की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर श्री महेश विद्यालंकार जी ने भी अपने प्रेरणाप्रद विचारों से आर्य समाज ग्रेटर कैलाश के प्रति अपनी आत्मीयता प्रकट करते हुए श्रोताओं को सरल भाषा में वेदों का सन्देश प्रदान किया।

श्री आनन्द चौहान जी का स्वागत करते आर्य समाज के अधिकारीगण/ नीचे चित्र में डॉ. विनय विद्यालंकार का स्वागत एवम् अभिनन्दन आर्य समाज द्वारा।

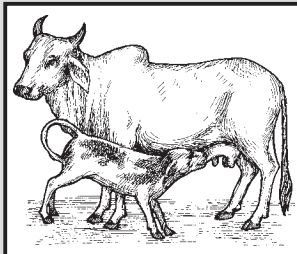
प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 में 1 सितम्बर से 7 सितम्बर 2014 तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन बहुत उत्साह और धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक पं. श्री कुलदीप जी (बिजनौर) ने श्रोताओं को कृतकृत्य किया। वेद-प्रवचनों की कड़ी में प्रथम दो दिवस श्री संजय शास्त्री जी ने तथा बाद में 3 सितम्बर से 7 सितम्बर तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार (उत्तराखण्ड) ने अपने सारगर्भित, लेकिन सरल प्रवचनों की ज्ञानवर्षा की।

प्रतिदिन प्रातःकालीन यज्ञ के अवसर पर आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 के दोनों धर्माचार्यों श्री वेद कुमार वेदालंकार जी एवं आचार्य



गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।



टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त

हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि त्रायकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

रावण वध क्यों?

□ राजेन्द्र आर्य

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः-(मनुस्मृति) अर्थात् जहाँ नारियाँ का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। रावण के विषय में लोगों में यह धारणा है कि वह एक बहुत बड़ा अत्याचारी, पापी तथा व्यभिचारी राजा था। इन्हीं सब धाराणाओं के वजह से प्रत्येक वर्ष दशहरा के मौके पर विजयदशमी के दिन देश के महानगरों में रावण का आयोजन किया जाता है, जिसमें किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या राजनेता के द्वारा राम के रूप में रावण के पुतले का दहन किया जाता है, जिसे रावण वध के रूप में जाना जाता है। इस आयोजन के मौके पर लाखों लाख की संख्या में स्त्री और पुरुष सम्मिलित होते हैं।

रावण श्रीलंका का एक बहुत ही शक्तिशाली राजा था, वह आचार्य विश्वश्रवा का पुत्र तथा स्वयं भी वेदों का विद्वान भी था मगर उसकी वृत्ति आसुरी प्रवृत्ति की थी और इसी वृत्ति के वजह से उसने मात्र एक अपराध किया था और वह है माता सीता का छलपूर्वक अपहरण।

रावण यदि चाहता तो सीता को अपहरण के बाद अपने महल के रनिवास में भी ले जाकर रख सकता था और इसका विरोध करने की हिम्मत किसी में नहीं था मगर उसने ऐसा न कर सीता को अशोक वाटिका में रखा जहाँ उसने पहरों के लिए महिला प्रहरी को ही नियुक्त किया था। इसके अतिरिक्त उसने कभी भी सीता के साथ वलप्रयोग नहीं किया बल्कि हमेशा प्रणय निवेदन ही किया। उसने अनेकों बार सीता से याचना की कि वह उसकी पटरानी बनना स्वीकार करें और वह सीता की सहमती के लिए प्रतीक्षारत रहकर मर्यादा का कुछ हद तक निर्वाह ही किया।

पर आज समाज की स्थिति क्या है? सारे समाज में रावणों की भरमार है। प्रत्येक शहर के हर मुहल्ले में रावणों की करतूतों से पूरा समाज भयाक्रान्त है वो रावण तो मात्र सीता का अपहरण ही किया था पर ये रावण तो सिर्फ सीता का अपहरण ही नहीं करते बल्कि कई-कई दिनों तक उसके साथ सामुहिक बलात्कार भी करते हैं और फिर साक्ष्य मिटाने के उद्देश्य से उसकी हत्या तक भी कर डालते हैं।

यत्र नार्यस्त पूज्यन्ते की मान्यता की वैदिक संस्कृति वाले इस देश में दो-दो बड़े-बड़े सहासंग्राम सिर्फ इसलिए हुए हैं कि उसकी जड़ में नारी की मर्यादा का उल्लंघन हुआ है।

पहला महासंग्राम राम और रावण के बीच में हुआ था, जिसके जड़ में माता सीता का छलपूर्वक अपहरण है और जिस वजह से रामायण की रचना हुई और जिसके नायक है मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम।

दूसरा महासंग्राम कौरव और पाण्डव के बीच में हुआ था जिसके जड़ में है द्रौपदी का चीरहरण का प्रयास और जिस वजह से महाभारत की रचना हुई और जिसके महानायक है योगेश्वर श्रीकृष्ण। यों तो अभी भी इस देश में नारी की पूजा होती है पर उसके स्वरूप किस प्रकार के है इस पर थोड़ा विचार करना आवश्यक है।

देवी के रूप में स्थापित माँ दुर्गा, माँ काली, माँ लक्ष्मी इत्यादि के प्रति तो हम भक्ति भाव रखते हैं पर वास्तविक नारी के प्रति व्यक्ति, परिवार और समाज का क्या नजरिया है इसे भी उजागर करना नितान्त आवश्यक है नारी पर अत्याचार की कहानी उसके जन्म लेने के साथ

ही शुरू हो जाती है बल्कि यों कहा जाए कि उसके जन्म लेने के पहले से ही शुरू हो जाती है और अत्याचार की यह यात्रा कितनी लम्बी होती है, इसे देखिए।

1. आज प्रतिदिन इस देश में सैकड़ों की संख्या में कन्या भ्रूणहत्या जारी है अर्थात् कन्या को जन्म लेने के पहले ही गर्भ में मार दिया जाता है क्योंकि उसका कसूर मात्र इतना ही है कि वे कन्या है और इसके लिए पिता के साथ ही साथ वो माता भी जिम्मेवार होती है जो स्वयं भी नारी ही है। इस वजह से देश में लड़का और लड़की का अनुपात निरन्तर घटता जा रहा है। अभी प्रत्येक 1000 लड़के पर मात्र 740 लड़की है। आगे चलकर यह अन्तर जब काफी बढ़ जायेगा जो एक अलग प्रकार का असंतुलन उत्पन्न हो जाएगा जिसे संभाल पाना काफी कठिन हो जाएगा।

2. किसी भी प्रकार जन्म से पहले मृत्यु से बच जाने के बाद जब कन्या धीरे-धीरे बड़ी होने लगती है तो 10 वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते उनके साथ शुरू हो जाती हैं बलात्कार की कहानी जिसमें गैर लोगों से ज्यादा खतरा रहता है अपनों से ही। बलात्कार के सर्वेक्षण के जो आंकड़े हैं वो बताते हैं कि करीब 70 प्रतिशत बलात्कार की घटना को अजाम दिया जाता है परिवार के निकटके सगे सम्बन्धियों द्वारा और वर्तमान में तो बहुत ही हृदय विदरक घटनाये सापने आने लगी है जिससे 4-5 वर्ष की अवोध बालिकाओं को बालात्कार का शिकार बनाया जाता है, जिस वजह से या तो वो खुदमर जाती है अथवा मार दी जाती है साक्ष्य मिटाने के बास्ते। इसका अर्थ यह हुआ कि आज का इन्सान हैवानियत की सारे हद पार कर जाना चाहता है।

3. किसी भी प्रकार जन्म से पहले की मृत्यु से बच जाने तथा बलात्कार की घटना से भी बच जाने अथवा झेल चुकने के बाद जब कन्या विवाह कर ससुराल जाती है तो वहाँ शुरू हो जाती है दहेजलोलुप दानवों की अत्याचार की कहानी। आज देश में प्रत्येक दिन कोई न कोई नवयोजना जिसके हाथों में मेंहदी अभी लगी ही होती है शिकार हो जाती दहेजरूपी दानवों के, जिसमें ससुराल के अन्य लोगों के साथ शामिल रहती है उनके पास भी जो स्वयं भी नारी ही है। आश्चर्य तो तब और भी बढ़ जाता है जब इस हत्याकांड में उसके पति महोदय भी शामिल रहते हैं, जिन्होंने अग्नि के सामने कसम खाई थी जीवन भर साथ निभाने को।

पहले के समय में ये जला दी जाती थी समाज के द्वारा पति के मरने के बाद और अब ये जलायी जाती है पति के द्वारा ही। परिवार और समाज का सवेदनशील होना ही पड़ेगा इस मामले में नहीं तो बहुत बड़ी अब अव्यवस्था फैल जाएगी क्योंकि इस तरह के परिवार में काफी लम्बे समय तक कोई भी अपनी लड़की को देना नहीं चाहेगा।

4. इन सबके अतिरिक्त एक और भी जाल इनके चारों तरफ लगी होती है वेश्यालयों के दलालों का जो स्टेशन, बस स्टैंड अथवा मेला वगैरह के जगहों पर मडराते रहते हैं, उन्हें दूढ़ने को जो किसी कारण से भटक गई हो, परिवार से विछुड़ गई हो अथवा घर से भाग गई हो किसी डर के वजह से। इन दलालों की पैनी नजर उसे पहचान लेती है और वो उसे अपनी सहानुभुति के जाल में फंसाकर पहुँचा देते हैं

वेश्यालयों में जहाँ कुछ दिन पालने पोसने के बाद उतार दी जाती है वेश्यावृत्ति के दलदल में जहाँ उसे जीवनभर अपना शरीर नोचवाना पड़ता है सभ्रान्त समझे जाने वाले गिद्धों के द्वारा।

5. इसके अलवा एक और भी महाजाल है इनके लिए, महाजाल हमने इसलिए कहा कि इसमें शरीर रहते हैं इनके गरीब माता-पिता अथवा अभिभावक भी जो भारस्वरूप इनका निर्वाह करते हैं किसी तरह। इन अभिभावकों में ज्यादातर होती हैं सौतेली माँ, मौसी, चाची, इत्यादि। विदेशी अरबों खरबों के सौदागर जश्न मनाने आकर ठहरते हैं पंचसितारा होटलों में और होटल के दलाल निकल पड़ते हैं अक्षत यौवना की तलाश में गरीब माता पिता अथवा नकली अभिभावक के पास और मुँह मांगे दामों पर सौदा पटाकर, शादी के नाम पर अथवा रोजगार के नाम पर पहुँचा देते हैं, उसे सौदागरों के एअर कण्डीशन कमरे में और जिस वक्त में भेड़िये उस नावालिक को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं अपने हैवानियत के द्वारा लहु लुहान हालत में चीत्कार कर उठती है ये वालायें और उस समय नोट गिन रहे होते हैं उनके माता पिता अथवा नकली अभिभावक। कौन तोड़ेगा इस महाजाल को। हम भारत सरकार से अपील करते हैं इन वालाओं की अस्मत् को लूटने वाले विदेशी पर्यटक अथवा सौदागरों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही करें। क्या हक बनता है समाज को ऐसे दरिद्रे रावणों के रहते हुए कागजी रावण वध के द्वारा हम किसे संतुष्ट करना चाहते हैं। जरूरत है अपने बीच पनप रहे रावणों के वध हेतु समाज कठोर निर्णय ले ताकि सही रूप में रावण वध मनाया जा सके। हम लड़कियों और महिलाओं से भी अपील करते हैं कि आप सिर्फ दुर्गा की पूजा ही न करें बल्कि दुर्गा के गुणों को भी धारणा कर स्वयं दुर्गा बनें और तोड़ दें उन हाथों को जो नापाक इरादों से आपकी तरफ बढ़ते हैं। स्मरण रहे कि आप उस वीरांगना दुर्गावती के सन्तानें हैं जिसने सम्राट अकबर से रणभूमि में लोहा लिया था। दरअसल ये सारे दुष्परिणाम मूर्तिपूजा के हैं जिसे भुगतने को हम विवश हैं क्योंकि हमने अपनी सारी आस्था समर्पित कर दी है देवी की प्रतिमा के आगे जिस वजह से ये वास्तविक देवियाँ उपेक्षित हो गई हैं।

- प्रचार मन्त्री, आर्य समाज, मुजफ्फनगर, बिहार

वर चाहिए

ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण 31 वर्ष 5'-1'', एम.एस.सी. (गणित), प्रोबेसनरी ऑफिसर (डिप्टी मैनेजर) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, भोपाल (मध्य प्रदेश) युवति हेतु सुशिक्षित एवं संस्कारवान् समकक्ष युवक की आवश्यकता है। जाति बंधन नहीं।

सम्पर्क सूत्र- आर्य कुमार शर्मा, (रिटायर्ड डी.एस.पी. भोपाल)
मोबाइल न. 09424468486, E-mail: sharmaak22@gmail.com

हम सादर हिन्दी अपनाएँ.....

हिन्दी के द्वारा सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

है आधी आजादी अपनी, पूरी आजादी को पाएँ।

तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ।

अंग्रेजों को दूर भगा कर, अंग्रेजी से चिपक गए हम।

आधी आजादी पा कर, लहराए अंग्रेजी का परचम।।

हिन्दी को सम्मान मिले तब, हम पूरे स्वाधीन कहाएँ।

तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ।

पढ़े, लिखें, बोलें हम हिन्दी, हिन्दी है जन जन की भाषा।

अंग्रेजी अपना कर अब तक, हम उपजाते रहे निराशा।।

हिन्दी के प्रति आओ, अपना हम पुनीत कर्तव्य निभाएँ।

तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ।

बोल-बोल कर अंग्रेजी, हम दुनिया भर को बता रहे हैं।

हम गुलाम हैं अंग्रेजों के, यही आज भी जता रहे हैं।।

हिन्दी हो भारत की भाषा, आओ संकल्पित हो जाएँ।

तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ।

भारत तो स्वाधीन हो गया, हिन्दी अब भी पराधीन है।

अंग्रेजी के रहते, अपनी यह आजादी दीन, हीन है।।

भारत के मानस से आर्यों, अंग्रेजी का भूत भगाएँ।

तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ।

है आधी आजादी अपनी, पूरी आजादी को पाएँ।

तज कर छलना अंग्रेजी को, हम सादर हिन्दी अपनाएँ।

- हरिकुमार साहू, पूर्व मन्त्री, आर्य समाज, गोंडपारा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़,

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहाँ एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/- रुपये व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

तोता बोल रहा है

□ देवनारायण भारद्वाज

वैदिक संस्कृति की सर्वोत्कृष्ट विशेषता यदि कोई है तो वह यही है, इसके कण-कण में उपदेश भरा हुआ है।

इसके पर्वत, वृक्ष, वनस्पति, पशु, पक्षी, वन सरिता सभी मानव-प्राणिमात्र के कल्याण के लिए कुछ न कुछ बोल पड़ते हैं, अथवा यूँ कहें बोलते रहते हैं, पर इनके बोल सुनाई उन्हीं को देते हैं जो सुनना चाहते रहते हैं, औरों को तो छोड़िये, एक तोता या शुक को ही ले लीजिये, जो टें-टें-टें-टें ही नहीं करता है, प्रत्युत मनुष्य की बोली को दोहराने भी लगता है। महानगर-नगर की बात नहीं, ग्राम के कच्चे मकानों के द्वार भी गोमय से लिपे पुते, रंगोली से चित्रांकित सजे-धजे स्वच्छ हुआ करते थे। बाहर ही एक पिंजड़े में तोता या तोती भी चहकते हुए कुछ न कुछ गाते-गुनगुनाते रहते थे। इन पक्षियों का वाक् चातुर्य भी विचित्र होता था। घर वाले इनको जो कुछ रटा देते थे, यह वही बोलते रहते थे, या फिर घर वाले जिन वाक्यों या शब्दों का अधिक उच्चारण करते रहते थे, वही इनकी चोंच से फूटने लगता था। एक सन्त ग्राम से निकल रहे थे, रात्रि होने वाली थी, इन्हें किसी गृहस्थ के यहां रात्रि निवास करना था। एक द्वार पर वे रूक गये। पिंजड़े के तोते ने उनको देखा और बुलन्द स्वर में बोलने लगा, 'दुष्ट-दुष्ट-दुष्ट, दूर जा दूर जा दूर जा'। तोता क्या, मानो उस घर की मनोवृत्ति बोल उठी। वह सन्त आगे बढ़ गये। मन में विकृत शब्द प्रहार लिए हुई कई घर छोड़कर वे चले ही जा रहे थे। एक और द्वार पर पिंजड़े में तोता बैठा था। वे उसकी ओर देखकर आगे की ओर जाना ही चाहते थे कि तोते ने आवाज लगाई- 'स्वागत, नमस्ते, आइये, पध रियो।' सन्त समझ गये यह परिवार सभ्य सुशील और विश्राम योग्य है। आज यहीं रूककर उपदेश दिया जाना ठीक रहेगा।

महात्मा आनन्द स्वामी की बोधकथा इस प्रसंग में बहुत उपयोगी है। मानव-आरोग्य के लिए महर्षि चरक ने प्रभूत शोध साधना की थी। उन्होंने अपनी चिकित्सा विद्या का परीक्षण करने के लिए पक्षी बनकर आयुर्वेदाचार्यों के चिकित्सालयों का विहंगम भ्रमण किया और प्रश्न किया- 'कोररूक्-अर्थात् रोगी कौन नहीं?' पृथक्-पृथक् वैद्यों ने अलग-अलग उत्तर दिये, किसी ने च्यवनप्राश, किसी ने त्रिफला, किसी ने लवण भास्कर और किसी ने चन्द्रप्रभा वटी खाने वाले को निरोगी बताया। इससे महर्षि चरक सन्तुष्ट नहीं हुए। सभी वैद्य रोग-निवारण की बात कर रहे थे, जबकि चरक जानना चाहते थे कि वह पद्धति बताई जाये जिससे कोई रोगी होने ही नहीं पाये। सरिता के समीप जाकर उन्होंने देखा कि कई वैद्य भी वहां स्नान कर रहे हैं। पक्षी रूप में चरक ने प्रश्न बोल दिया, 'कोररूक्-कोररूक्-कोररूक्', इसे सुनकर वहां उपस्थित वैद्यराज वाग्भट्ट ने उत्तर दे दिया- 'हितभुक्-मितभुक्, ऋतुभुक् अर्थात् जो हितकारी, सीमित व ऋतु व शास्त्र के अनुकूल भोजन करता है वह रोगी नहीं होता। इस प्रकार चरक प्रसन्न होकर अपनी विद्या की देन को जीवन्त देखकर चले गये। स्वयं वेद ने पशु-पक्षियों को आधार बनाकर बोधगम्य उपदेश दिये हैं। उदाहरण के लिए एक वेद वाक्य को प्रस्तुत करके कथन का समर्थन करते हैं। 'शुकेषु में हरिभाणं रोपाणाकासु दध्मसि' (ऋ 1.50.2) अर्थात् किञ्चित् आधि

-व्याधि के कारण मनुष्य ने अपने मुख मण्डल पर आने वाले पीलेपन को देखकर सोचा कि यह मेरे मुख पर क्यों आ गया है, यह तो तोता-तोती आदि के शरीर पर ही शोभा देता है। मानव-मुख की ओज-लालिमा दो ही कारणों से पीतिमा में बदल जाती है-या तो उन्होंने कोई लज्जाजनक काम किया हो या फिर किसी रोग ने आकर के उन्हें घेर लिया हो। परमात्मा ने तोते की योनि ही ऐसी बनाई है जिसकी देह का रंग हरीतिमा या पीतिमा लिए होता है। मन्त्र-देवता 'सूर्य' से यही संकेत मिलता है कि वे व्यक्ति जो सत्यवादी मृदुभाषी सुभाषी होते हैं उनके मुख तेजोमय ललित लालिमा की आभा दिखाते हैं और दूसरे मनुष्य हैं जो शब्दों को रटते रहते हैं, उनके अधरों पर कुछ, हृदय में कुछ और व्यवहार में कुछ का कुछ होता है। तोते के रूप में परमात्मा ने चलता-फिरता ही नहीं उड़ान भरता एक ऐसा पक्षी हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया, जिसके सभी अन्य पक्षियों की भांति दो पक्ष (पंख) होते हैं। भौतिक रूप से यह दोनों पंख उसके उड़ने में सहायक होते हैं, किन्तु जीवन के व्यवहार में इनका सन्तुलन नहीं रहने पाता। 'तोता रटन्त या तोताचश्म' प्रकार के मनुष्य बोलते कुछ समझते कुछ, समझ भी लेते हैं तो उसके अनुकूल नहीं प्रतिकूल ही आचरण करते हैं।

यहां पर वह दृष्टान्त कितना सटीक बैठता है जिसमें तोता को दुःखी देखकर एक सन्त ने उन्हें उपदेश दिया, 'बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, फंसना नहीं'-तोता ने इसे खूब रट लिया और गाना आरम्भ कर दिया। उठते-बैठते वे यही गीत गाते थे। बहेलिया तोता को पकड़ने के लिए जंगल में आया और उसने तोता का यह सामूहिक गान सुन लिया: बहुत उदास हो गया। अब तोते नहीं फंसेंगे-वह यह विचार कर रही रहा था कि उसका बालक बोल पड़ा-पिताजी एक बार प्रयत्न करके तो देखिये। उसने वही सब कुछ किया जो वह पक्षियों को फांसने के लिए पहले करता था। पक्षियों ने भी वही किया जो वे पहले करते थे। अन्तर बस एक था, इस बार से अपने मुख से 'बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाना डालेगा, फंसना नहीं' का मधुर गान गाते जा रहे थे और दाना चुगने के लिए जाल में फंसते भी जा रहे थे। बच्चों को बाल्यकाल से ही यह समझा दिया जाना चाहिए कि तोता या कोई अन्य पक्षी आकाश में उड़ने के लिए दो पंख रखता है तो धरती पर चलने के लिए दो पैर भी रखता है, किन्तु परमात्मा ने मनुष्य को दो ऐसे शीघ्रगामी पंख चक्र प्रदान कर दिये हैं जिनसे वह धरातल पर चल तो सकता ही है, और उन्हीं से यश-आकाश में उच्च से उच्चतर उड़ान भरकर अपनी कीर्ति पताका भी फहरा सकता है। 'वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं शुन्धामि चरित्रास्ते शुन्धामि।'।

यजुर्वेद (6-14) में मेधावान गुरु अपने शिष्य को जीवन की सफलता के लिए उसे योग्य विद्वान बनाना चाहता है और वह सर्वप्रथम उसके शरीर के अंगों, वाणी, नासिका, नेत्र, कान, नाभि, मूत्रेन्द्रिय, गुदेन्द्रिय एवं चरण को शुद्ध करने की प्रेरणा करता है। महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र के भावार्थ में रहस्य खोलते हुए कहा

है-गुरु और गुरु पत्नियों को चाहिए कि वेद और उपवेद तथा वेद के अंग और उपांगों की शिक्षा से देह, इन्द्रिय, अन्तःकरण और मन की शुद्धि, शरीर की पुष्टि तथा प्राण की सन्तुष्टि देकर समस्त कुमार और कुमारियों को अच्छे-अच्छे गुणों में प्रवृत्त करावें।' आत्मा का देह-रथ या यान का हृदय व मस्तिष्क से निर्मित चलयन्त्र (इंजन) जिन दो चक्रों पर चलता है उनमें से एक का काम प्राशन करना तो दूसरे का काम निष्कासन करना है। प्रत्येक चक्र की दृढ़ता के लिए उसमें चार-चार ताने हैं। प्राशन मुख नासिका व श्रोत्र से करते हैं। निष्कासन में नाभि, मूत्र-गुदा व चरण अंगों का सहयोग रहता है। बापू के पास तीन बन्दर की मूर्तियाँ थी। एक अपने हाथों से मुख को दूसरी आंखों को और तीसरी कानों को बन्द रखते हुए बुरा बोलने, बुरा देखने और बुरा सुनने से मना करती थी। नाक बंद नहीं हो सकती थी, क्योंकि उसके द्वारा प्राणों की क्रिया संचालित रहने पर ही तो शरीर द्वारा शेष काम हो सकते हैं, फिर नाक से ली जाने वाली गन्ध स्थान व आहार की गुणवत्ता भी सूचित करती है। प्राशन या ज्ञान संभरण का यह चक्र वाणी से प्रारम्भ होकर श्रोत्र या कर्ण पर पूर्ण होता है, जिससे निर्मित सोच से मनुष्य के हाथ करणीय कर्म करते हैं। देह के ऊपरी भाग का यह चक्र करणीय कर्मों के द्वारा उसे ऊपर की ओर उठाता है। उसको यश की उड़ान पर ले जाता है। नीचे की ओर स्थित उसका दूसरा चक्र नाभि से प्रारम्भ होकर चरण पर पूर्ण होता है, जिससे विकसित होता है उसका आचरण उसे जो धरती पर शौच या शुद्धता की गति प्रदान करता है। विगत काल में पंजाब के वयोवृद्ध जन इस चक्र के भाव को भलीभाँति जानते थे। जब कोई बालक उने चरण स्पर्श करता था, तब वे उसे 'खाते पीते रहो' के स्थान पर 'हगदा मूतता रह' के आशीर्वाद द्वारा सम्प्रेरित करते थे। आशय जब मल-मूत्र विसर्जन द्वारा उसके पाचक अंग स्वच्छ-स्वस्थ रहेंगे तो संभरण तो स्वयंमेव होता ही रहेगा। यदि खाना पीना जारी रहा और पेट शुद्ध नहीं हुआ तो उसको बीमारी से कोई बचा नहीं सकता।

मन्त्रोक्त बाह्यकरण के द्वारा ऊपरी भाग को यदि 'दर्शन चक्र' कहते हैं तो नीचे के भाग को 'प्रदर्शन चक्र' कह सकते हैं। इन दोनों चक्रों के चक्रमण या गतिशीलता के लिए उत्तरदायी होता है-शरीर व संसार को संचालित करने वाला चल यन्त्र (इंजन) जिसे मनुष्य

के अन्तःकरण के रूप में जाना जाता है। इसके भी चार तान-वितान मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार समन्वित होकर उसे बनाते हैं-'सुदर्शन चक्र' जिसके सजग सतर्क प्रयोग से मनुष्य के भीतर-बाहर के शत्रु-संहार द्वारा विजय को वरण करता है। द्विचक्री (साइकिल) के पीछे आगे के दो चक्र (पहिये) जब घूमते हैं तो सवारी आगे चलती है। यह दोनों चक्र (पहिये) पैडल से जुड़े सूक्ष्म चक्र (पहिये) के द्वारा चलते हैं। पैडल के इस सूक्ष्म चक्र को गद्दी पर बैठा हुआ सवार अपने पैरों में जीवात्मा ही वह सवार है जिसके चलाने से उपरोक्त चक्र चलते हैं, उसकी जीवन यात्रा आगे व ऊपर की ओर बढ़ती है। उसके आचरण के चरण थम जाते हैं या डगमगा जाते हैं तो उसकी प्रभा यात्रा रूक जाती या पतन को प्राप्त हो जाती है। अस्तु हमें शुक्र नहीं शुक्र को अपना आदर्श बनाना चाहिए।

- वरेण्यम्, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रुपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रुपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रुपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)

शिवराजवती आर्या
उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

समाचार दर्पण

आर्य मान्यताओं से ओतप्रोत, आर्य वीरांगना, आर्य समाज का गौरव प्रो. डॉ. शशि प्रभा कुमार को राष्ट्रपति सम्मान



स्वाधीनता दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष देश और विदेश के विभिन्न विद्वानों, जिन्होंने संस्कृत, पर्शियन, अरेबिक और पाली तथा प्राकृत भाषाओं में मौलिक शोध किया हो, को देश के राष्ट्रपति द्वारा एक सम्मान-पत्र प्रदान किया जाता है। इस वर्ष प्रो. शशिप्रभा कुमार, उप-कुलपति, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, भोपाल,

मध्यप्रदेश को संस्कृत में उनके उच्च-स्तरीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया है। प्रो. शशिप्रभा कुमार इससे पहले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग की अध्यक्ष एवं वर्तमान में दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्ष हैं। डॉ. कुमार एक आर्य परिवार से संबंध रखती हैं और ऋषि दयानन्द के विचारों का गंभीरता से अनुसरण करते हुए देश विदेश में इसका प्रचार-प्रसार भी करती हैं। 'टंकारा' परिवार प्रो. शशि प्रभा कुमार को इस राष्ट्रपति सम्मान के लिए बधाई देते हुए उनके स्वस्थ, सक्रिय और सफल दीर्घ-जीवन की कामना करता है।

रश्मि विद्यार्थी प्राचार्य डी.ए.वी. पानीपत सम्मानित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल थर्मल कालोनी पानीपत की प्राचार्या श्रीमती रश्मि विद्यार्थी को भारत स्काउट एण्ड गाइड हरियाणा द्वारा स्काउट के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए थैंक्स बैज देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन चण्डीगढ़ में राज्यपाल भवन में किया गया था जिसमें हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाडिया, शिक्षा मंत्री श्रीमती गीता भुक्कल, प्रधान सचिव श्री के.के.खण्डेलवाल द्वारा यह प्रदान किया गया है। ज्ञातव्य है कि पानीपत जोन के सभी स्कूलों को मिलाकर एक जिले के रूप में मान्यता दी गई है। पिछले तीन वर्षों में इस जिले ने 11 स्काउट कैम्प लगाकर एक हजार से अधिक बच्चों को प्रशिक्षण दिया है इनमें बैंगलौर, माउंट आबू, शिमला, हरिद्वार, पानीपत, रतिया के शिविर प्रमुख हैं। श्रीमती रश्मि विद्यार्थी ने न केवल इन शिविरों में भाग लिया अपितु विधिवत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है।



यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्यसमाज मुम्बई (काकडवाडी) में वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत 'यजुर्वेदपारायण महायज्ञ' संस्कृत रक्षा सम्मेलन' व 'कृष्ण जन्माष्टमी समारोह' का आयोजन किया गया। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के आयोजन द्वारा यज्ञ की उपादेयता, पर्यावरण शुद्धि में यज्ञ का महत्वपूर्ण योगदान आदि विषय में विद्वानों द्वारा वैज्ञानिक महत्व की जानकारी दी गई। 'संस्कृत रक्षा सम्मेलन' के माध्यम से संस्कृत भाषा के वैशिष्ट्य, उसके आलौकिक व समृद्धिशाली साहित्य, उसमें निहित दिव्य सूक्तियों तथा वर्तमान काल में उसकी उपयोगिता के विषय में विद्वानों द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई। आर्यसमाज मुम्बई के वेद सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित श्री कृष्णजन्माष्टमी समारोह के माध्यम से योगीराज श्रीकृष्ण के विषय में फैली इन भ्रान्तियों का समाधान किया गया।

हाँसी में गरीब कन्या का विवाह सम्पन्न

वैदिक संस्कृति प्रचार मिशन द्वारा एक जरूरतमन्द गरीब कन्या का विवाह आचार्य रामसुफल शास्त्री के नेतृत्व में कराया गया। वन्दना सिलाई सेन्टर की छात्राओं द्वारा वर-वधू को मनपसंद उपहार प्रदान किए गए।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति

आर्यसमाज हाथीखाना राजकोट द्वारा प्रतिदिन यजुर्वेद का सम्पूर्ण महायज्ञ हुआ जिसमें सुबह 12 दम्पती और सायंकाल 12 दम्पती कुल 300 यजमानों ने लाभ लिया। इस महायज्ञ में पूज्य आचार्य विद्यादेव जी (पूर्व आचार्य टंकारा) ने ब्रह्मा के स्थान को सुशोभित किया तथा वेदपाठियों के रूप में उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के ब्रह्मचारी उपस्थित थे। यज्ञ के उपरांत भजन और फिर आचार्य श्री जी यजुर्वेद के मन्त्रों के गूढ़ विषय (रहस्य) और उसके महत्व को बहुत अच्छी सरल भाषा में समझाते थे। साथ टंकारा के ब्रह्मचारियों द्वारा ईश्वर भक्ति और ऋषि भक्ति के भजनों को प्रस्तुत किया।

पूर्णाहुति के दिन सुबह यज्ञ के बाद सभी यजमानों को आशीर्वाद महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य जी ने दिया। उसके बाद सार्वदेशिक सभा के सहमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य का सम्मान तथा सत्यदेव मुनि आर्य समाज बड़वाण, टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य रामदेव जी और हसमुख भाई परमार तथा आचार्य विद्यादेव जी को शाल और श्रीकृष्ण चन्द्र जी का फोटो देकर सभी आर्यसमाज के ट्रस्टियों द्वारा सम्मान किया गया।

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना में रक्षाबंधन समारोह

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना ने दयानन्द हाल में रक्षाबंधन पर्व मनाया। सभा की अध्यक्षता श्री राजेन्द्र जी स्याल (उप-प्रधान, आर्य समाज मॉडल टाऊन लुधियाना) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में अरूणा जी पधारी। गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष जी का परिचय दिया और रक्षाबंधन की बधाई देते हुए कहा कि त्यौहार हमारे आपसी संबंधों को मजबूत करते हैं। यह गुरुकुल प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का समन्वय है। यहाँ शिक्षा और विद्या दोनों के द्वारा ब्र. के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास पर बल देते हैं। उन्होंने पंजाब बोर्ड की दसवीं की परीक्षा का परिणाम बताया। गुरुकुल की सबसे छोटी ब्र. प्रकृति ने अध्यक्ष जी को एवं ब्यूटी ने श्री पुरुषोत्तम जी महाजन को राखी बांधी। दसवीं कक्षा की ब्र. प्रिया ने मंच संचालन किया। ब्र. ने भाषण, भजन, गीत एवं योगासन के द्वारा सभा को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि जी ने रक्षाबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला तथा कहा कि आज की नारी इतनी सशक्त हो कि चट्टान जैसी बाधा का भी मुकाबला कर सके।

अध्यक्ष जी ने ब्र. को आशीर्वाद देते हुए उनके कार्यक्रम की प्रशंसा की और कहा कि यह पर्व समाज के टूटे हुए हृदयों को जोड़ने का सन्दर अवसर है। कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल की ओर से



गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगल राम जी मेहता ने अभिभावकों का धन्यवाद किया और सबको राखी के पर्व की बधाई दी। उन्होंने कुलपति जी की दीर्घायु तथा स्वास्थ्य-लाभ के लिए दो बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करवाया। गुरुकुल की अधिष्ठात्री डॉ. सुमन जी शारदा ने सभा में उपस्थित समस्त महानुभावों का धन्यवाद किया।

केरल में वैदिक क्रांति का उदय

आर्य समाज का अपनी स्थापना से एक ही सबसे बड़ा उद्देश्य रहा है मानव मात्र को वेद तथा वैदिक संस्कृति का ज्ञान कराना। इसी पृष्ठभूमि में वेदभूमि केरल में लोगों को महर्षि दयानन्द की मान्यताओं से अवगत कराने के लिए वर्तमान का 500 गज का भवन भी पर्याप्त नहीं था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) की स्थापना हुई। जिसका शिलान्यास समारोह कोशिकोड (कोझीकोड) केरल में भव्य राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल आर्य चैयरमैन एम.डी.एच. मसाले वालों के करकमलों से नव संकल्पित वेदाश्रम भवन का शिलान्यास किया गया। समारोह में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि यदि स्वर्ग चाहते हो तो ओम् का जाप करो, यज्ञ करो। वेद का यही आदेश है। संसद सदस्य श्री सत्यपाल सिंह ने कहा कि लार्ड मैकाले ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का जो कुचक्र रचा उसका निराकरण वैदिक संस्कृति के संरक्षण और व्यापक प्रचार से ही संभव है। आर्य सन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने ऐसे भव्य आयोजन और शुभ संकल्प के लिए महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते हुए सभी



दिशाओं में इस प्रकार के आश्रम खोलने को कहा। कार्यक्रम में स्वामी सौम्यानन्द जी, स्वामी ऋतस्पति, डॉ. ब्रह्ममुनि जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आर्य समाज के सिद्धान्तों को जन जन तक पहुंचाने के लिए आचार्य एम.आर. राजेश जी द्वारा मलयालम भाषा में लिखी गई नौ पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

नारीत्व हुआ गौरवान्वित

हिण्डौन (राजस्थान) के आर्य समाज भवन में द्वादश “कल्याण आर्य” स्मृति कल्पना चावला पुरस्कार कोटा (राज.) की कुमार सृष्टि गोयल को दिया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत 5100/- की नकद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र, संस्था का प्रतीक चिन्ह, शाल एवं श्रीफल योग पीठ हरिद्वार के महासचिव श्री अजय आर्य ने प्रदान किए।

समारोह को संबोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने प्रकट किया कि यह कार्यक्रम तो पुनर्जागरण पुरोधा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्देशित नारी उत्थान कार्यक्रम की ओर रही प्रयास है।

प्रभात की प्रभा

आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत समारोह के अवसर पर आयोजित द्विदिवसीय संस्कृत भाषण तथा संस्कृत गीतगायन प्रतियोगिता में **गुरुकुल प्रभात आश्रम** के ब्रह्मचारी नीरज ने संस्कृत भाषण में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया तथा ब्रह्मचारी दीपक ने संस्कृत गीतगायन में तृतीय स्थान प्राप्त किया। ब्रह्मचारियों की इस उपलब्धि पर उनके सम्मान में आश्रम में एक भव्य सभा का आयोजन किया गया तथा आश्चर्य किया गया कि अन्य संस्थाओं के दलरूप में भाग लेने पर भी इन एकल प्रतियोगियों ने अपनी योग्यता का परिचय दिया। आश्रम में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के निष्पक्ष निर्णायकों का भी भूरिशः धन्यवाद किया गया।

आर्य युवा समाज पंजाब

राष्ट्रीय अध्यक्ष आर्य युवा समाज श्री पूनम सूरी जी के योग्य मागदर्शन एवं आशीर्वाद से आर्य युवा समाज पंजाब व डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सराभा नगर एक्सटेंशन लुधियाना सदैव ही स्वामी दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज के सिद्धान्तों का पालन करते हुए असहाय व मजबूर लोगों की सहायता करने में अग्रणी रहा है। इस बार भी जब सहायता की आवश्यकता उनके अपने परिवार के सदस्य को पड़ी तो आर्य युवा समाज पंजाब एवं विद्यालय के स्टाफ, छात्रों व अभिभावकगण तथा उनके शुभचिंतकों ने मिलकर कुल पाँच लाख रुपये की धनराशि जमा कि ताकि विद्यालय के अकाउंटेंट के पद पर कार्य कर रहे श्री उमेश कुमार शर्मा जी का उचित रूप से इलाज करवाया जा सके। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे इलाज करवा पाने में अक्षम थे। इन परिस्थितियों में प्रदेशाध्यक्ष आर्य युवा समाज पंजाब एवं प्रधानाचार्य डॉ. मोहन लाल शर्मा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सराभा नगर एक्सटेंशन लुधियाना के आह्वान पर विद्यालय के स्टाफ, छात्रों व अभिभावकगण तथा अनेक शुभचिंतकों ने उनके इलाज के लिए दिल खोलकर दान दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र द्वारा वेद प्रचार

प्रतिवर्ष की भाँति आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के तत्वावधान में श्रावणी के पर्व पर यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत आर्य समाज परली बैजनाथ, आर्य समाज लातूर, आर्य समाज सोलापुर में एक एक सप्ताह कार्यक्रम किया गया जिसमें डॉ. रघुवीर वेदालंकार (दिल्ली) को प्रवचन हेतु आमन्त्रित किया गया। उनके द्वारा जो प्रवचन दिये गये, उनसे वहाँ के लोगों ने धर्मलाभ उठाया। आर्य समाजों के अतिरिक्त स्कूलों एवं कॉलेजों में भी वेद प्रचार किया गया, जिससे वहाँ के ऋषि भक्त बहुत प्रभावित हुए।

आर्य युवक सभा द्वारा वेद प्रचार

आर्य युवक सभा अमृतसर ने अपने सीमित साधनों से विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में छात्र/छात्राओं को ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना मन्त्र, वैदिक संध्या, स्वस्तिवाचनम्, शान्तिकरणम्, ऋषि दयानन्द गुणगान कण्ठस्थ कराकर नकद पुरस्कार दिया। आर्य गर्ल्स स्कूल की 50 छात्राओं को सभा प्रधान श्री मुरारीलाल आर्य ने दैनिक यज्ञ कराना सिखाया। इसके साथ ही डी.ए.वी. स्कूलों के छात्र/छात्राओं को वैदिक विचार धारा से ओत प्रोत कराने में वर्ष भर अपनी अहम भूमिका निभाई।

विद्यार्थियों को बांटी पाठ्यसामग्री

आर्य समाज जिला सभा कोटा ने जरूरतमन्द छात्रों को उपलब्ध पाठ्यसामग्री का वितरण किया। जिसके अन्तर्गत आर्य समाज द्वारा छात्र-छात्राओं को स्कूल बेग, कॉपियाँ, पेन, पेन्सिल, रबर, कटर आदि बांटे गए। इस अवसर पर आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि माता-पिता व गुरुजनों का आदर करें, उनसे प्रेरणा लें तथा श्रेष्ठ मानव जिसे आर्य कहते हैं वह बनने का प्रयास करें।

साप्ताहिक यज्ञ-योग का आयोजन

योग समिति जिला झज्जर के तत्वावधान में साप्ताहिक यज्ञ-योग का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा ने अपने उपदेश में कहा-यज्ञ की अग्नि हमें ऊपर उठने का व गतिशील रहने का सन्देश देती है। मनुष्य को अपनी अग्नि को प्रदीप्त रखना चाहिए ताकि जीवन में उत्थान तथा गतिशीलता बनी रहे।

श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न

श्रावणी उपाकर्म भव्य रूप में आर्य समाज जामनगर, गुजरात ने मनाया गया। कार्यक्रम का आरम्भ ओ३म् ध्वज आरोहण के साथ हुआ। मुख्य प्रवक्ता श्री रविश शास्त्री जी के द्वारा, ध्वज फहरा गया।

श्रावणी पर्व के विशेष मन्त्रों वा चारो वेदों के मन्त्र द्वारा यज्ञ किया और यज्ञो पवीत परिवर्तन किया। कुल 200 आर्य सज्जनों ने भाग लिया था। यज्ञ के सुयोग्य ब्रह्मा समाज के पण्डित श्री चन्द्र शास्त्री जी थे। यज्ञ के बाद मुख्य वक्ता श्री रविश शास्त्री जी ने श्रावणी उपाकर्म के बारे में बहुत ही सरल भाषा में सबको दृष्टान्त के माध्यम से समझाया। श्री महेश भाई रामाणी जी ने स्वामी दयानन्द के अनेक कार्यों का वर्णन भजनों के माध्यम से दिया।

श्रावणी एवं वेद प्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज वडोदरा के तत्वावधान में, वेद मंदिर-आर्यसमाज वारशिया, यज्ञ प्रचार समिति तथा श्री फतेहसिंह आर्य अनाथाश्रम-करेलीबाग, महिला सत्संग मंडल-वडोदरा के सहयोग से श्रावणी पर्व का सन्देश घर-घर तक पहुँचाने के उद्देश्य से आयोजन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्रावणी के इसी क्रम में एम.एस. विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरूण आर्य जी की अध्यक्षता में वेद व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ के ब्रह्मचारी श्री दिनेश कुमार जी ने अपने सारगर्भित प्रवचनों से ईश्वर, धर्म और परिवार में हमारे कर्तव्यों के विषय में हमें विशेष ज्ञान कराया। आर्यसमाज की सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत मुख्य अतिथि डॉ हसमुख भाई के करकमलों से विकलांगों को तीन पहिये की साइकिलें (2) एवं एक वोकर भेंट दिए। वयो वृद्ध एवं समर्पित आर्य आदरणीय श्री परसोत्तम भाई ठाकोर (18 वर्ष) तथा आदरणीय श्री अर्जन भाई वेलाणी पूर्व प्रधान जी (72) को पीत वस्त्र उढ़ाकर सम्मानित किया गया।

शोक समाचार

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक श्री पं. वेगराज आर्य, भूडिया, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश का देहावसान 7 अगस्त 2014 को लगभग 75 वर्ष की आयु में हो गया। पं. वेगराज जी प्रखर वक्ता, लालित्य पूर्ण, साहित्यिक ऊँचाई को छने वाले, भाषा के चतुर खिलाड़ी, सुमधुर गायक थे। कुँवर सुखलाल, पं. प्रकाशचन्द की परम्परा के उत्साही वैदिक पथगामी थे, मिशनरी भावना से ओतप्रोत लम्बे समय तक आर्यसमाज वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार बड़ी आत्मीयता एवं उत्साह के साथ किया। पं. वेगराज जी अपने पीछे पुत्र-पौत्रादि से सम्पन्न परिवार छोड़ कर गये हैं। परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं परिजनों को विच्छेद सहने का सामर्थ्य प्राप्त हो।



आर्य समाज निजामुद्दीन पूर्वी के वर्तमान प्रधान अनेक संस्थाओं के सदस्य, भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व उच्च पदाधिकारी बलराज मेहता जी का आयु 92 वर्ष की अवस्था में दिनांक 27 जुलाई 2014 को सायं 5:30 बजे स्वर्गवास हो गया। निजामुद्दीन पूर्वी के समस्त आर्य परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

(पृष्ठ 1 का शेष)

होने देते, कार्यकुशल हैं, जिस तरह नदियां समुद्र के पास जाती हैं, उसी तरह वे सज्जनों के लिए सदा सुलभ हैं, वे आर्य हैं, सब पर समदृष्टि रखते हैं, हमेशा प्रसन्नचित रहते हैं, गम्भीरता में समुद्र के समान और धर्य में हिमालय के समान कौसल्या के आनन्द को बढ़ाने वाले श्रीराम सभी प्रकार के गुणों से समन्वित हैं। वाल्मीकि रामायण में काफी विस्तार से राम के गुणों का वर्णन है, हमने संक्षिप्त दिग्दर्शनमात्र कराया है।

आर्य संस्कृति के प्रतीक : मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम के गुण में तीन संस्कृतियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं—एक आर्य-संस्कृति, दूसरी वानर-संस्कृति और तीसरी राक्षस-संस्कृति। सम्भवतः आदिकाल में एक ही मानव-वंश रहा होगा, परन्तु उसके बाद कालक्रम से उनके आचार-विचार और रहन-सहन में परिवर्तन आता गया और वे विभिन्न संस्कृतियों के पोषक बन गए। खास बात यह है कि ये तीनों संस्कृतियाँ वैदिक धर्मावलम्बी हैं। तीनों में वेदों के अध्ययन की परम्परा है। इन तीनों संस्कृतियों के तीन प्रमुख केन्द्र हैं—आर्य-संस्कृति का केन्द्र अयोध्या, वानर-संस्कृति का केन्द्र किष्किन्धा और राक्षस-संस्कृति का केन्द्र लंका। वानरों की पूंछ आदि की कल्पना करके पौराणिक जगत् ने अपने कल्पना-विलास का ही परिचय दिया है, जबकि वानर भी अयोध्या के निवासियों की तरह वैसे ही मनुष्य थे जैसे आर्य लोग थे। वानर का अर्थ बन्दर नहीं, बल्कि वन में रहने वाला है। वे वन्य जातियाँ थीं, जो वनों और पहाड़ों में रहती थीं। आज भी देश की काफी बड़ी संख्या जंगलों और पहाड़ों में रहती है। भ्रम से हम उन्हें पाश्चात्य लेखकों के अनुकरण पर आदिवासी कहने लगे हैं, जबकि सही अर्थ में उन्हें ‘वनवासी’ या ‘गिरिजन’ कहा जाना चाहिए। वनवासी और वानर का एक ही अर्थ है। जिस प्रकार वानर बन्दर नहीं थे, उसी प्रकार राक्षस भी अमनुष्य नहीं थे। वे भी अयोध्या-निवासी आर्य जनों के समान ही सामान्य मनुष्य-मात्र थे। हां, इन तीनों की संस्कृतियों में अन्तर था।

जहाँ तक भौतिक समृद्धि का प्रश्न है, वाल्मीकि रामायण के कथनानुसार न किष्किन्धा अयोध्या से कम थी और न ही लंका। बल्कि लंका का तो भौतिक समृद्धि के कारण नाम ही ‘सोने की लंका’ पड़ गया। अन्तर भौतिक समृद्धि में नहीं, अपितु आचार-विचार और संस्कारों में स्पष्ट अन्तर है। वानर और राक्षस दोनों मदिराप्रायी हैं, जबकि अयोध्या में मदिरापान का वर्णन नहीं मिलता। बाली और सुग्रीव का आपसी भ्रातृ-कलह ‘वानर’ संस्कृति का ही प्रतीक हो सकता है। अयोध्या में इस प्रकार के भ्रातृ-कलह की कल्पना हम नहीं कर सकते। बाली द्वारा सुग्रीव की पत्नी का अपहरण और बाली की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी तारा का सुग्रीव द्वारा वरण वानर-संस्कृति की ही विशेषता है, आर्य-संस्कृति की नहीं। जहाँ तक राक्षसों का प्रश्न है, वे तो निरे विषलम्पट थे ही। विभीषण और रावण के कलह के रूप में भ्रातृ-कलह भी वहाँ विद्यमान है और रावण द्वारा पराई स्त्रियों के अपहरण की तो अनेक घटनाएँ हैं।

इन तीनों राज्यों में राजतन्त्र की प्रथा है। तीनों जगह मन्त्रिपरिषद् है, परन्तु रावण अपनी मन्त्रिपरिषद् की सलाह मानने की बजाय स्वेच्छाचारिता की ओर अग्रसर है। इसी स्वेच्छाचारिता ने विभीषण को अलग कर दिया। किष्किन्धा और लंका में वेदाध्ययन के साथ ब्राह्मणों का भी अस्तित्व है। किन्तु आर्य, वानर और राक्षस-संस्कृति में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि आर्यतर संस्कृतियों में आश्रमों की परम्परा नहीं। आर्य राज्य में सर्वत्र ऋषियों के आश्रम हैं, उनमें वेदाध्ययन के साथ-

साथ आर्य-संस्कृति के प्रसार की चिन्ता है; ऋषि लोग तप और स्वाध्याय में निरत रहकर यज्ञ-याग में लगे रहते हैं, जबकि राक्षस उनके यज्ञों में विघ्न डालने को ही अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण समझते हैं। आर्य लोग स्वभाव से अहिंसा-प्रिय हैं परन्तु राक्षसों की ज्यादाती के कारण अन्त में स्वयं ऋषि ही अयोध्या के आर्य राज्य के राजकुमार को शस्त्र-ग्रहण के लिए प्रेरित करते हैं और लंका-विजय की योजना बनाते हैं। इस प्रकार वानर और राक्षस-संस्कृति के मुकाबले में आर्य-संस्कृति की विशेषता को देखें तो उसका सार यह निकलता है कि आर्य लोग तप, त्याग और वैदिक विधान के अनुसार वर्णों और आश्रमों की मर्यादा का पालन करते हुए जीवन को निरन्तर उन्नत, उन्नततर बनाते हुए आदर्श बनने का प्रयत्न करते हैं, जबकि वानरों और राक्षसों में जीवन के नैतिक आदर्शों का वैसा प्रसार नहीं। राक्षस लोग तो निश्चित रूप से ‘खाओ-पियो-मौज उड़ाओ’ की भोगवादी संस्कृति के प्रतीक हैं और आर्य लोग त्यागवाद की संस्कृति के, जबकि वानर-संस्कृति इन दोनों के बीच में विद्यमान है। आर्यों के त्यागवाद में मर्यादित भोगवाद है और जीवन में धर्मपूर्वक अर्थ और काम का सेवन करते हुए मोक्ष-प्राप्ति का प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है, जबकि राक्षसों का भोगवाद निर्मर्याद है, उसमें त्यागवाद का कहीं लेश नहीं। वे हिंसा के माध्यम से अपने राज्य का विस्तार करना चाहते हैं। आर्य-संस्कृति के अनुयायी अहिंसा का हथियार विफल हो जाने पर ही हिंसा का आश्रय लेते हैं और तब दुष्ट को दण्ड देकर ही छोड़ते हैं। राक्षस-संस्कृति हिंसा-परायण है, आर्य-संस्कृति यज्ञ-परायण। वानर-संस्कृति का रुझान आर्य-संस्कृति की ओर है पर आर्यजनों की उपेक्षा के कारण वे नैतिकता के उच्च आदर्शों तक नहीं पहुँच सके। राम ने पहली बार उनकी ओर हाथ बढ़ाया तो वे सहर्ष राक्षसों से लड़ने के लिए आर्यों के साथ हो गए थे। आज भी तो वन्य जातियाँ आर्यों की उपेक्षा की शिकार हैं। वे आर्यजनों के स्नेह की आकांक्षी हैं, पर आर्यजन उधर ध्यान न देकर राक्षसों की ओर अग्रसर हैं। राक्षस-संस्कृति पर विजय पाने के लिए आर्यों और वन्य जातियों का संगम आवश्यक है। पहल आर्यों को ही करनी होगी। श्रीराम ने मार्ग दिखाया है। उसी पर चलकर आर्य-संस्कृति की विजय होगी। उसी विजयोन्मुख आर्य-संस्कृति के प्रतीक हैं श्रीराम। —चयनिका से साभार

टंकारा में बोधोत्सव 2015 का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 16, 17, 18 फरवरी 2015 को किया जायेगा।

आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

// श्रद्धांजलि //

चल अनन्त की आर

परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि की संरचना ब्रह्मा के रूप में की है क्योंकि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक संरचना के पीछे ब्रह्मा का स्थान प्रमुख माना गया है किसी भी तरह के यज्ञ को सम्पन्न करने के लिए ब्रह्मा का स्थान जैसे प्रमुख हुआ करता है। इसी प्रकार से गृहस्थ रूपी यज्ञ की सुचारू संरचना के लिए जिस ब्रह्मा की आवश्यकता होती है उसका नाम स्त्री है इसलिए अथर्ववेद में बड़े गौरव के साथ कहा गया है। **स्त्री ब्रह्मा बभूविथ** अर्थात् मानव जीवन के आधारभूत गृहस्थ के निर्माण में स्त्री जाति का स्थान ब्रह्मा की तरह प्रमुख है। मुंजाल परिवार के पारिवारिक निर्माण यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में स्वर्गीय श्रीमती हर्ष मुंजाल का स्थान भी प्रमुखता से याद किया जाता रहेगा। मेरी पूजनीया, हम सभी का आदर्श जिन्हें हम भाभी हर्ष के नाम से सम्बोधित करते रहे हैं वे मुंजाल परिवार के लिए मंजूषा बन के इस परिवार को उषा की तरह प्रकाशित करती रही हैं। उन्हीं के द्वारा परिवार के प्रति किये गये उपकारों को याद करते हुए संस्कार विधि के इस वाक्य को कि-

“**तामद्य गाथाम् गास्यामि या स्त्रीणाम् उत्तमम् यशः**” के अनुसार उनके गुणों को याद करते हुए उनकी गाथा का वर्णन करने के लिए बाधित होना पड़ा है। मेरी भाभी मातृत्वशक्ति परिपूर्ण श्री सदैव मुझ पर व मेरे परिवार पर उनकी छत्र छाया बनी रही। उनका शुभाशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहा है। यह परिवार उस मातृत्व शक्ति की मंगलमयी स्नेहमयी गोद में अपने आपको सुरक्षित समझते रहे हैं। नीतिकार कहता भी है **माता यस्य गृहे ना अस्ति भार्या चाप्रियवादिनी तेन अरण्यं गन्तव्यं यथा गृहं तथारण्यम्** अर्थात् जिस घर में मां नहीं और व मधुर बोलने वाली पत्नी नहीं ऐसा कुल तो वन के समान हुआ करता है। हमारी भाभी मातृत्व मृदुभाषित्व इन दोनों गुणों से युक्त होकर जब तक जीवित रही तब तक इस घर को उन्होंने स्वर्ग तुल्य बनाये रखा है। स्वर्गीय श्रीमती हर्ष मुंजाल स्नेह और सौजन्य की देवी थीं। अपनी वाणी से हम सभी के जीवन को अमृतमय बनाती रही। उनके नेतृत्व में आनन्द का स्रोत सर्वत्र बहता रहा। वे सन्तप्त हृदय की शीतल छाया थी। उनके हास्य में निराशा मिटाने की पूर्वशक्ति विद्यमान थी। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद ने उनके जीवन को देखकर यह गीत गाया होगा-

तुम अजस्र वर्षा सुहाग की और स्नेह की सुमधुरजनी।
चिरअप्त यदि जीवन था तो उसमें तुम सन्तोष बनी।
नारी तुम तो श्रद्धा हो विश्वास रचत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।।
धीरता गम्भीरता उनके जीवन की विशेषता रही है उनका जीवन यज्ञमय रहा है। शरीर ने जब तक साथ दिया निरन्तर स्वयं यज्ञ को किया है क्योंकि मनु का आदेश भी था।

यथा शक्तिर्न हापयेत् अर्थात् जब तक सामर्थ्य हो यज्ञ को नहीं छोड़ना चाहिए। इन्होंने यज्ञ को त्यागा भी नहीं। यही कारण था कि पति के लिए चरित्र रूप में, सन्तान के लिए ममता रूप में, समाज के लिए शीतलता के रूप में, संसार के लिए दयालुता के रूप में तथा जीवमात्र के लिए करुणा संजोनेवाली महाप्रवृत्ति का नाम ही भाभी हर्ष मुंजाल था। उनका सम्पूर्ण जीवन एक पवित्र स्वर्गिक ज्योति था, त्याग उनका स्वभाव था प्रदानता को उन्होंने अपना धर्म माना था। सहनशीतलता उनका व्रत था और उनकी प्रेमभरी दृष्टि ही उनका जीवन था। उनका जीवन परिवार के लिए एक ईश्वरीय उपहार था। अपनी सुशीलता के कारण उन्होंने मुंजाल परिवार को यशस्विता का जो वर्चस्व दिया है हमें वह सदैव याद रहेगा। परिवार को स्वर्गतुल्य बनाकर रखना उनकी तपस्विनी गृहणी व माता का ही कार्य हो सकता है जो उन्होंने अपने जीवन में कर दिखाया है।

आज वह दिव्यआत्मा हमारे मध्य में शरीर रूप में विद्यमान नहीं हैं परन्तु उनके आदर्श व दिव्य गुण सदैव हमारे साथ विद्यमान रहेंगे। उनके न रहने से जो क्षति परिवार को हुई है उसे पूर्ण करना असंभव है। इसी बात को संस्कृत का कवि कहता है- **यत्रापि कुत्रापि गता भवन्ति हंसाः महिमण्डले मण्डनाया। हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां येषां मरालैः सह विप्रयोगः** हंस तो हंस ही होते हैं इनका काम एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाकर उसकी शोभा को बढ़ाना ही हुआ करता है। पूर्वस्थान छोड़ते हुए उनका कुछ नहीं बिगड़ता जो उस सरोवर का है। जिसे वो छोड़ कर चले गए हैं। भाभी हर्ष मुंजाल भी मुंजाल उद्यान की हंस के रूप में थी वह हंस भी हमें छोड़कर अनन्त की ओर चल दिया। ईश्वर उन्हें मोक्ष प्रदान करें। यही कामना है।

- रमा मुंजाल और सुरेश मंजाल

Our Dearest Daadi Harash Munjal

We grew up in her lap,
seeing her ever smiling face,
listening to stories....
and playing here and there..
Her love surrounded us and made us strong,
better from your last performance,
she said is what you have to perform.
She was loved by one 'n' all

Pious by soul, humble in all deeds.
Epitome of Love is what our daadi was.
The void she has left us, will never be filled.
Daadi we love you, bless us so we follow
your foot steps
and pay you our tributes.

Avi & Yajan
Madhav & Sadhak

हमारे हर्ष भाभी जी

हर्ष भाभी जी हमारे परिवार में सबसे बड़ी पुत्रवधू थीं। वह एक सुशिक्षित सुदृढ़ आज की नारी थी। वह एक सनातन धर्म परिवार से आयी थीं, किन्तु यहाँ आते ही उन्होंने आर्य परिवार की बहू का धर्म निभाते हुए अपना एक वरिष्ठ स्थान बना लिया था। सभी वैदिक मान्यताएं कुशलता पूर्वक अपना ली। उनके पदचिन्हों पर चलते हुए हम सब बाकी पुत्र वधुओं ने भी वैसा ही किया। कहते हैं, बड़ों का अनुसरण छोटे करते हैं। उन्होंने एक बहुत अच्छा उदाहरण हम सबके लिए रखा और हमारा भी मार्ग दर्शन किया। उनका व्यक्तित्व आकर्षक और मधुर था। परिवार में सब छोटे बड़े आपका सप्रेम आदर करते थे। उनकी हृदय की उदारता सदैव दूसरे की गलतियों को माफ कर देती थी। जब वह 1987 में दिल्ली आई, उस वक्त भी वह पूरे परिवार का आकर्षक बिन्दु रही। हर एक का आवभगत करती थीं।

समय के साथ-साथ उनकी यज्ञ और योग प्रक्रिया में अधिक रूचि होने लगी। अपने बच्चों की शादी के बाद वह पूरी तरह आर्य समाज को समर्पित हो गयी। प्रातः 4:00 बजे उठकर ध्यान की प्रक्रिया करती थीं फिर यज्ञ हवन करती थीं और सामाजिक कार्यों में जुट जाती थीं। कहते हैं जहाँ चाह हैं वहाँ राह प्रभु दिखा देते हैं। उनको ईश्वर ने आदरणीय कपिलमुनि जी से मिलवाया। कपिलमुनि जी वेदों के ज्ञानी थे। अत्यधिक अध्ययन करके भाभीजी ने उनसे कई बीमारियों के लिए उपयुक्त मन्त्र और हवन करने की विधि सीखी। हर्ष भाभी जी ने इसका खूब प्रसार किया और लोगों के घर-घर जाकर भी हवन कराया। उनका सपना था कि घर-घर में यज्ञ हो और इस के लिए वह निरन्तर परिश्रम करती रहीं। सार्वजनिक रूप से उन्होंने कई यज्ञ आयोजन करवाये और लोगों को प्रेरित किया कि वह अपने घरों में हवन करें जिससे कि वातावरण प्रदूषण से मुक्त हो जाये। समिधा सामग्री हवन का पूरा सामान उपलब्ध कराती थीं, ऐसी थी हमारी हर्ष भाभीजी। सबके लिए प्रेरणा का स्रोत। हम सब भगवान से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी आत्माओं को अत्यन्त प्रेम और शान्ति प्रदान करे और परिवार उनके कार्यों को आगे बढ़ाये।

-अंजू मुंजाल

Harash Munjal

God made mothers and sent them on planet earth to be with each and every child of His so that all His children get the unconditional Divine love from his or her mother.

We were blessed to have an angelic soul, our dearest mother Harash Munjal in our lives. Her love, values, kindness surrounded us in every sphere of life.

She was our spiritual guide and yet our best friend too. She guided us with her foresightedness and today every little value embodied in us in her gift of love, values and teachings. She was a giver, not expecting anything in return. Always spreading her love and light to one and all.

A true devotee of Arya Samaj and Swami Dayanand she performed Havan diligently at many homes, healing people and helping them move out of distress.

Her undoubted faith in 'AUM' made her perform the saintly duties unconditionally. Her positive Values empowered on each and everyone she met.

She embodied the qualities of a perfect daughter, sister, wife, daughter in law, mother and grand mother. Talented in every walk of life, being a perfect host, treating each guest as "Atithi devobhav" she was a live example of an impeccable human angel.

Even during the days of her tough ill health journey her face sparkled with Divinity, peaceful and Serene omitting Light at all times. She was a living embodiment of sheer divinity.

Her unmatched and unparalleled qualities i.e. generosity, humility, compassion, kindness and selflessness to name a few always left us awestruck.

God sent us His favourite and precious Angel to be with us and give us love and spread her light.

She has left her physical form today, but we know she's watching over us with all her love and light and her blessings will always remain with us.

We love you.....

Neeraj & Charu Munjal

मेरी ईश्वर स्वरूप माँ

मानव का चोला तो इसलिए मिला है कि ज्ञान के द्वारा कर्म, कर्म के द्वारा उपासना और उपासना के द्वारा प्रभु में लीन हो जाना, यह विचार थे हमारी पूजनीय माँ श्रीमती हर्ष मुंजाल जी के। उन्होंने अपना सारा जीवन “गायत्री” और “ओ३म् की महिमा” को समर्पित किया। आर्य समाज के प्रति उनका अटूट समर्पण सदैव ही अतुल्य रहा। उनके जीवन का लक्ष्य सिर्फ परमात्मा को पाना था। वह हर पल कहती थी कि, “मैंने इस जन्म मरण के चक्रव्यूह से बाहर निकल कर मोक्ष प्राप्त करना है।” यज्ञ करना, गायत्री का जाप एवं ध्यान लगाना उनकी दिनचर्या होती थी। यह ही नहीं, वह लोगों के घर-घर जाकर भी उन्हें हवन कराती थीं एवं प्रोत्साहित करती थीं कि सब हवन नियमित रूप से करें।

यज्ञ के प्रति उनकी निष्ठा और समर्पण सर्वोच्च था। उनका मानना था कि दैनिक यज्ञ करने वाला आनन्दमयी होता है। यज्ञ करने से जगत का कल्याण होता है, वातावरण शुद्ध होता है और ईश्वर की कृपा दृष्टि सदैव बनी रहती है। स्वामी दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा वह प्रतिवर्ष परिवार सहित जाती थीं। उनका उद्धार, दयालु हृदय सेवा भाव से परिपूर्ण था। टंकारा में स्त्रियों के एक सिलाई केन्द्र में जब वह गयी, उन्होंने वहाँ प्रतिदिन हवन होने का भाव प्रकट किया। सबके सहमत होने पर उन्होंने हवन के उपलक्ष्य में कई वर्षों तक समिधा सामग्री का प्रबन्ध निरन्तर रखा। उन्होंने सदैव हमारा मार्ग दर्शन किया और ईश्वर की उपासना करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका असीम प्रेम पूरे परिवार को एक डोर में बांधे रखता था। माँ का प्यार व दुलार एक ऐसा कवच हैं जो पल पल निरन्तर अपने बच्चों को छत्र छाया प्रदान करता है। आज देह रूप में वह हमारे समक्ष नहीं हैं परन्तु प्रभु में लीन हो कर वह हर पल अपने असीम प्रेम एवं आशीर्वाद से हमें संरक्षण प्रदान करती रहेंगी। कुछ पंक्तियाँ जो उन्होंने स्वयं लिखी थी।

“सुख वहाँ होता है जहाँ शान्ति होती है, शान्ति वहाँ होती है जहाँ प्रेम होता है, प्रेम वहाँ होता है जहाँ विश्वास होता है, विश्वास वहाँ होता है, जहाँ सत्य होता है और सत्य वहाँ होता है जहाँ धर्माचरण होता है, धर्माचरण तभी होता है जब हम सच्चे ईश्वर को मानते हैं।”

- निधी राजेश कपूर

शोक समाचार

यज्ञ प्रेमी माँ नहीं रही

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का निधन दिनांक 03.09.2014 को नई दिल्ली में हो गया है। आप पिछले कुछ वर्षों से रूग्ण अवस्था में थीं लेकिन परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार आपने इस देह को त्याग दिया। आप श्री योगेश मुंजाल, ट्रस्टी, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं ला. दीवान चन्द ट्रस्ट के अतिरिक्त अन्य कई शिक्षण संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी तथा सुप्रसिद्ध हीरो परिवार के प्रमुख सदस्य की धर्मपत्नी एवं महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जो कि विश्व की आर्य समाजों में चर्चित नाम है, कि पुत्रवधू थीं।



आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं और सारे दायित्वों से निवृत्त हो चुकी थीं। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। आज के भौतिक वातावरण में महिलायें जहां किट्टी आदि परम्पराओं में संलग्न हैं, वहां श्रीमती हर्ष मुंजाल जी ने महिलाओं का एक छोटा सा संगठन बनाया जिसकी 60 महिला सदस्यायें हैं। एक संगठन की एक महिला के यहां प्रति मास क्रमानुसार यज्ञ करवाया जाता

है और श्रीमती हर्ष मुंजाल स्वयं यज्ञ करवाती थीं। निःसन्देह यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने अपने पुत्र पुत्रियों को भी इस प्रकार के संस्कार दिये और वे भी यज्ञ से जुड़े हुए हैं। मुंजाल परिवार के प्रत्येक सदस्य के घर पर यज्ञशाला है और वहां प्रतिदिन यज्ञ होता है।

दिनांक 06.09.2014 को हुई प्रार्थना सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। उपस्थित जन समूह में आर्य जगत् के संन्यासीवृन्द एवं प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही उद्योग जगत् से भी भारी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे।

ऐसी दिवंगत यज्ञप्रेमी माँ के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले।

- अजय टंकारा वाला

हर्ष जी की अस्थियों की राख टंकारा में

जिन वैदिक मान्यताओं पर श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का सारा जीवन आधारित रहा उसी के अनुसार परिवार वालों की इच्छा पर उनकी चिता की राख टंकारा के खेतों में डालने के लिए भिजवायी गई। उनकी इच्छा अनुसार इस राख को खेतों में डाल दिया गया। कुछ राख एक पेड़ लगाने के लिए रख दी गई और अगले दिन प्रातः उसी राख को गड्डे में डालकर वहां वेल वृक्ष का आरोपण किया गया। इस अवसर पर श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के आचार्य श्री रामदेव जी एवम् गुरुकुल के ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। यह वेल वृक्ष मुंजाल भवन के सामने लगाया गया। और एक पट जिस पर श्रीमती हर्ष मुंजाल स्मृति वृक्ष का आरोपण उस पर अंकित किया गया। परिवार की इच्छानुसार वृक्ष किसी उपयोगी औषधिय फल का हो को देखते हुए ही वेल वृक्ष का आरोपण किया गया।



**Death is at any time
blessed, but it is twice
blessed for a warrior
who dies for his cause
that is, truth.**

M.K. Gandhi

**जैसे नदी बह जाती है
और लौटकर नहीं आती,
उसी प्रकार रात और दिन
मनुष्य की आयु लेकर चले जाते हैं,
फिर नहीं आते।**

दीप जलते जगमगाते रहे
हम आपको आप हमे याद आते रहे
जब तक जिंदगी है, दुआ है हमारी
आप यूँही दिये की तरह जगमगाते रहे
शुभ दीपावली

टंकारा समाचार

अक्टूबर, 2014

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-10-2014

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.09.2014

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक

MDH

मसाले

असली मसाले

सच - सच

महाशिर्यो दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 Website : www.mdhspices.com